मंत्र·तंत्र·यंत्र
विज्ञान

विषय-सूची

———

वर्ष–९

अंक–५

मई-१९८९

✻ ✻ ✻ ✻ ✻ ✻ ✻ ✻ ✻ ✻ ✻ ✻

मुद्रक प्रकाशक लेखक

एवं

सम्पादक

योगेन्द्र निर्मोही

सम्पर्क—

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

डॉ० श्रीमाली मार्ग

हाईकोर्ट कोलोनी,

जोधपुर–३४२००१ (राज०)

टेलीफोन : २२२०९

आनो भद्राः कृतयो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और
भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

प्रार्थना

ॐ प्रियं वै स्यौ देवत्वं गुरू वैं सह सिते न ।

हे गुरूदेव ! आप हमारे प्रिय बने, सूर्य की तरह हमारे हृदयों में प्रकाश कर अविद्या रूपी अन्धकार को दूर करें और हर क्षण आप हमारे साथ रहें ।

भैरवी चक्र

शास्त्रों में और तांत्रिक ग्रन्थों में ऊर्वशी अप्सरा को वश में करने, उसे प्रिया रूप मे देखने और उसके माध्यम से धन, सम्पत्ति, सुख सौभाग्य प्राप्त करने के लिए साबर मन्त्रों में भी कुछ विधियां दी गयी हैं, जिसके माध्यम से इस प्रकार के कार्य सम्पन्न हो सकते हैं ।

मन्त्रों के माध्यम से अथवा साधनाओं के माध्यम से धन प्राप्त करना अथवा जीवन की समस्याओं को मिटाना और जीवन में निरन्तर उन्नति करना गलत नहीं है, साधु सन्यासी भी इसका उपयोग करते रहे हैं, और फिर साबर मन्त्र तो स्वयं भगवान शिव के अक्षर रूप हैं, और उनके द्वारा स्पष्ट किये हुए इन मन्त्रों के माध्यम से ही मनोवांछित कार्य सम्पन्न होते हैं ।

ऊर्वशी अपने आप में अत्यन्त सौन्दर्य युक्त अप्सरा है, जो कि एक तरफ रूप और यौवन से परिपूर्ण है, तो दूसरी ओर धन और सुख सौभाग्य देने में भी सफल है, इसीलिए ऊर्वशी साधना को जीवन का सौभाग्य माना गया है ।

इस प्रकार की साधना को तांत्रिक ग्रन्थों में "भैरवी चक्र साधना" कहा है, भैरवी का तात्पर्य -- एक ऐसी देवी जो मन्त्रों के द्वारा साधक के लिए सिद्ध हो कर उसका मनोवांछित कार्य सम्पन्न करती है, और इसीलिए उर्वशी जैसी अद्वितीय अप्सरा को सिद्ध करने और प्रिया रूप में उसे अपने अनुकूल बनाने तथा धनदायक लक्ष्मी के रूप में अपने अनुकूल बनाने में सिद्ध ऐसे प्रयोग को भी "भैरवी चक्र प्रयोग" कहा गया है ।

यह प्रयोग मुझे एक सन्यासी से प्राप्त हुआ था, और उन्होंने उर्वशी को साबर मन्त्रों के द्वारा पूर्णतः सिद्ध कर रखा था, आश्चर्य की बात यह कि सन्यासी जी के आश्रम में न तो धन की किसी प्रकार से कमी थी और न सुख सौभाग्य की, सात्विक जीवन व्यतीत करते हुए भी उन्होंने इस अद्वितीय साधना को सिद्ध कर अपने जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्णता प्राप्त कर ली थी ।

पत्रिका पाठकों को मैं ऐसी ही दुर्लभ और अद्वितीय साधना इन पंक्तियों के माध्यम से दे रहा हूं, आप स्वयं एक बार इस प्रयोग को कर के तो देखिए वास्तव में ही आप एहसास करेंगे कि यह साधना शीघ्र सिद्धिदायक, पूर्ण प्रभावयुक्त और अचूक फल देने वाली है ।

यह मात्र दो दिन की साधना है, किसी भी शुक्रवार की रात्रि से यह प्रयोग प्रारम्भ होता है, और शनिवार की रात्रि को समाप्त हो जाता है, इस साधना को पुरुष या स्त्री कोई भी सम्पन्न कर सकता है ।

साधना काल में पुरुष अच्छे और सुन्दर वस्त्र धारण कर के बैठे, साधक चाहे तो धोती कुर्ता या पैंट शर्ट आदि किसी भी प्रकार के उत्तम सुसज्जित वस्त्र धारण कर के उत्तर दिशा की ओर मुंह कर सामने बैठ जाय ।

फिर सामने एक थाली में 'उर्वश्यै नमः' अक्षर लिखें, और उसके आगे गुलाब या अन्य पुष्पों को बिछा कर उस पर भैरवी चक्र को स्थापित कर दें, इसे तांत्रिक ग्रन्थों में उर्वशी यन्त्र, अप्सरा यन्त्र या भैरवी यन्त्र भी कहा है, यह यन्त्र महत्वपूर्ण और जीवन भर उपयोगी रहता है ।

फिर इस यन्त्र की संक्षिप्त पूजा करें, और प्रार्थना करे, कि मैं अमुक जाति अमुक नाम का , पुरुष पूर्ण प्रेम एवं आत्मीयता के साथ साबर मन्त्र के द्वारा उर्वशी सिद्ध करने जा रहा हूं, जिससे कि उर्वशी प्रिया रूप में मेरे आधीन रहे, और जीवन भर, जैसी और जो भी मैं आज्ञा दूं, उसे पूरा करें ।

इसके बाद इस यन्त्र के सामने शुद्ध घृत का दीपक लगावे और पहले से ही मंगाया हुआ पान या जिसे संस्कृत में ताम्बूल कहते है, वह मुंह में रख कर चबा लें, पान में कत्था, चूना, सुपारी, इलायची आदि डाल कर यह पान बाजार में कहीं पर भी पान वाले की दुकान पर मिल जाता है ।

इसके बाद स्फटिक माला से निम्न मन्त्र का २१ बार उच्चारण करें, इसमें पूरी माला मन्त्र जप का विधान नहीं है ।

साबर उर्वशी मन्त्र

ॐ नमो आदेश। गुरू को आदेश । गुरूजी के मुंह में ब्रह्मा उनके मध्य में विष्णु और नीचे भगवान महेश्वर स्थापित है, उनके सारे शरीर में सर्व देव निवास करते हैं, उनको नमस्कार। इन्द्र की अप्सरा गन्धर्व कन्या उर्वशी को नमस्कार । गगन मण्डल में घुंघुरुओं की झंकार और पाताल में संगीत की लहर ।

लहर में ऊर्वशी के चरण। चरण में थिरकन। थिरकन में सर्प। सर्प में काम वासना । काम वासना में कामदेव। कामदेव में भगवान शिव । भगवान शिव ने जमीन पर उर्वशी को उतारा। श्मशान में धूनी जमाई। उर्वशी ने नृत्य किया। सात दीप नवखण्ड में फूल खिले, डाली झूमी। पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण आकाश पाताल में सब मस्त भये ।

मस्ती में एक ताल दो ताल तीन ताल। मन में हिलोर उठी, हिलोर में उमंग, उमंग में ओज, ओज में सुन्दरता, सुन्दरता में चन्द्रमुखी, चन्द्रमुखी में शीतलता शीतलता में सुगन्ध, और सुगन्ध में मस्ती। यह मस्ती ऊर्वशी की मेरे मन भाई।

यह मस्ती मेरे सारे शरीर में अंग अंग में लहराई, उर्वशी इन्द्र की सभा छोड़ मेरे पास आवे। मेरी प्रिया बने, हरदम मेरे साथ रहे, मेरो कहियो करे, जो कहूं सो पूरो करे, सोचू तो हाजर रहे, यदि ऐसो न करे तो दस अवतार की दुहाई, ग्यारह रूद्र की सौगन्ध, बारह सूर्य को वज्र, तेतीस कोटी देवी देवताओं की आण।

मेरो मन चढ़े, अप्सरा को मेरो जीवन उसके शृंगार को। मेरी आत्मा, उसके रूप को। और मैं उसको, वह मेरे साथ रहे। धन, यौवन सम्पत्ति, सुख दे। कहियो करे, हुकुम माने। रूप जीवन भार से लदी मेरे सामने रहे। जो ऐसो न करे, तो भगवान शिव को त्रिशूल और इन्द्र को वज्र उस पर पड़े।

यह मंत्र अपने आप में ही पूर्ण सिद्धिदायक मंत्र है। साबर मंत्र सीधे सरल और स्पष्ट होते है, इसीलिए उसके उच्चारण में किसी प्रकार का दोष व्याप्त नहीं होता, जिस सन्यासी ने मुझे यह मंत्र और प्रयोग विधि समझाई थी उन्होंने बताया था कि रात्रि को इस मंत्र को २१ बार उच्चारण करना पर्याप्त है पर यदि साधक चाहे तो १०८ बार उच्चारण कर सकता है, पर इससे ज्यादा इस मंत्र का उच्चारण करने की जरूरत नहीं है।

दूसरे दिन शनिवार को भी इसी प्रकार से मंत्र जप करे, और मंत्र जप के बाद वह उस भैरवी यंत्र को धागे मे या चैन में पिरो कर अपने गले में धारण कर ले। उस समय, जब उर्वशी साधक के पास प्रत्यक्ष प्रकट हो तब साधक को चाहिए कि पहले से ही मंगाये हुए फूलों के हार को उसके गले में पहना दें, खाने के लिए पान दें, और हाथ में हाथ लेकर वचन ले ले, कि जैसा साधक कहेगा, उर्वशी जीवन भर उसी प्रकार से कार्य करती रहेगी।

इसके बाद जब भी साधक इस मंत्र का एक बार उच्चारण करेगा तो उर्वशी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सामने स्पष्ट होगी और साधक का कहा हुआ कार्य सम्पन्न करेगी।

साधना में सिद्धि और सफलता साधक के विवेक और श्रद्धा पर निर्भर है। यदि वह पूर्ण श्रद्धा युक्त इस प्रयोग को करता है, तो उसे निश्चय ही सफलता प्राप्त होती है।

उपरोक्त साधना में जो भैरवी यन्त्र का विवरण आया है उसे धनराशि से क्रय-विक्रय नहीं किया जा सकता। आप किसी को भी पत्रिका का एक वर्ष का सदस्य बना कर इस यन्त्र को सुरक्षित रूप से प्राप्त कर सकते है।

आप नीचे दिया हुआ प्रपत्र भर कर हमें भेज दें, हम १०५/रू. की वी. पी. से (९६/रू. एक वर्ष का पत्रिका शुल्क तथा ९/ रू. पोस्टेज खर्च) यह दुर्लभ यंत्र सुरक्षित रूप से भेज देंगे। वी.पी. छूटने पर आपको यह यंत्र प्राप्त हो जायेगा, जिस का आप उपयोग कर सकते है, और हम आपके द्वारा बताये हुए मित्र या स्वजन को पत्रिका सदस्य बना कर सन् ८९ में पूरे वर्ष भर पत्रिका भेजते रहेंगे।

भैरवी यन्त्र उपहार प्रपत्र

मैं आपका पत्रिका सदस्य हूँ और इस साधना को सम्पन्न करना चाहता हूं, कृपया आप १०५) रु, की वी. पी. से मुझे उपरोक्त यंत्र सुरक्षित रूप से भेज दें। वी.पीं. प्राप्त होने पर मैं छुड़ा लूंगा।

वी. पी. छूटने पर आप मेरे मित्र को पत्रिका सदस्य बना दे और उन्हें पूरे वर्ष भर नियमित रूप से पत्रिका भेजते रहे।

मेरी पत्रिका सदस्यता संख्या..................

मेरा नाम..

मेरा पूरा पता..

....

आप वी. पीं. छूटने पर मेरे निम्न मित्र को पत्रिका सदस्य बनाकर उन्हें नियमित रूप से पत्रिका भेजते रहे।

मेरे मित्र का नाम..

मेरे मित्र का पता..

....

भूले बिसरे दिन

जीवन का असली आनन्द साधना में है, यह बात मैंने बहुत देर से जानी. मैं पढ़ा लिखा, अपने ज माने का मसहूर बेरिस्टर था, मेरी भरी पूरी गृहस्थी थी, और अपने बच्चों से मुझे असीम प्यार था और आज भी है ।

परन्तु एक दिन रात को पड़े पड़े यह सोचा कि यदि मुझ में मनुष्यत्व है, तो मुझे इस मल मूत्र भरी जिन्दगी से बाहर निकल कर अमृत की खोज करनी चाहिए, वह अमृत जो वास्तव में ही जीवन का आधार है, हमारे पूर्वजों का रहस्य है, और सृष्टि का भाग्य विधायक है ।

इस प्रकार की लड़ाई झगडे, मार-पीट, छल द्वेष, भरी जिन्दगी तो करोड़ों - करोडों लोग जी ही रहे है, इसमें कोई नई बात नहीं है, यदि हम तटस्थ हो कर देखे तो हम इसलिए जी रहे है क्योंकि हम जीने के लिए मजबूर है, हमारे जीवन में विष के अलावा कुछ है ही नहीं ।

अमृत हम से कोसों दूर है और उससे भी बड़ी दुखदाई स्थिति यह है, कि हम न तो अमृत की खोज कर रहे है, और न अमृत का आनन्द ही ले रहे है। शंकराचार्य ने अपनी 'शंकर स्मृति' पुस्तक में अत्यन्त भाव भीने शब्दों में कहा है, कि जीवन का असली सौन्दर्य वास्तविक अमृत साधना में ही हैं, जिसने अपने जीवन में एक बार साधना का अमृत चख लिया, वह जीवन में सब कुछ प्राप्त कर लेता हैं उसे एक असीम तृप्ति सी अनुभव होती है, जो वास्तव में ही साधना में मग्न है, जिन्होंने वास्तव में ही साधना के रहस्य को जाना है, वे ही इसका आनंद इसकी मस्ती और इसकी तृप्ति का अनुभव कर सकते है।

साधना के मूल में कोई स्वार्थ नहीं होता, जो वास्तव में ही मर्द है, जो वास्तव में ही बहादुरी के साथ जीवन को पार लगाना चाहते है, जो वास्तव में ही दम-खम के साथ सांस लेना चाहते है, वे समुद्र के किनारे पर नहीं बैठते, वे तो बीच मझधार में कूद कर लहरों से जूंझते है और जीवन का आनंद उठाते है और यह बात भी सही है, कि जो घबरा कर समुद्र के किनारे बैठे रहते है, उन्हे केवल घोंघे ही हाथ आते है। असली मोती तो वे प्राप्त करते है, जो बीच मझधार में कूदते है, हो सकता है, कि इस संघर्ष में कोई मगरमच्छ उनको निगल ले, या लहरों में जूंझते जूंझते मृत्यु हो जाय, परन्तु यदि वे बच जाते है, तो निश्चय ही उनकी हथेली पर दुर्लभ और अलौकिक मोती होते है।

खाट पर पड़े पड़े मरना या रोगों से तड़फते हुए घिसट घिसट कर सांस लेने में कोई आनन्द नहीं है, उस धुंआ देती हुई लकड़ी का क्या उपयोग, जो धीरे धीरे जल तो रही है, पर चिनगारी नहीं फूट रही है, जो केवल धुंआ ही देना जानती है, उससे न तो उसका कोई हित है, और न लोगों को ही उसका लाभ मिल सकता है। इसकी अपेक्षा तो चाहे, एक क्षण के लिए ही सही, भभक कर जले' ऐसा एक क्षण का जीवन भी सार्थक है, क्योंकि इस प्रकार भभकने से एक क्षण के लिए ही सही, रोशनी तो होती ही है और उस रोशनी से हजारों लोगों को प्रकाश

आगे मैं उन्हीं छोटी मोटी साधनाओं को अपने गुरू भाइयों के लिए प्रस्तुत कर रहा हूं, ये सभी साधनाएं प्रामाणिक है, और इनका तुरन्त फल प्राप्त होता है। मैंने स्वयं इन साधनाओं को आजमाया है और प्रत्येक बार मुझे इसमें सफलता मिली है। वास्तव में ही इन साधनाओं को आवश्यकता पड़ने पर आजमाना चाहिए और उपयोग करना चाहिए।

मिलता है।

ऐसा ही चिन्तन उन दिनों में हो रहा था. मैं सुलगती हुई, धुंआ देती हुई लकड़ी की तरह जीना नहीं चाहता था, मैं भभकना चाहता था, स्वयं को और समाज को रोशनी देना चाहता था, और मैं साधना में उतर गया। यह मेरा सौभाग्य था, कि उन्हीं दिनों मुझे स्वामी निखिलेश्वरानन्दजी के दर्शन हुए, और पहली ही नजर में मैं उन पर पर सम्मोहित सा हो गया, पहली ही नजर में मुझे वह व्यक्तित्व अद्वितीय सा लगा। मुझे लगा कि यह आत्मा कोई 'देवात्मा' है, जिसके चरणों में बैठने से बहुत कुछ प्राप्त हो सकता है, और मैंने विधिवत उनसे दीक्षा प्राप्त कर ली।

काफी वर्षो तक मेरा उनका साथ रहा, उन दिनों मैं अन्य कई योगियों और सन्यासियों के सम्पर्क में भी आया पूज्य गुरूदेव से मिलने रोज कई कई सन्यासी और योगी आते ही रहते थे, वे गुरूदेव के सामने तो कुछ नहीं कह सकते थे, परन्तु जब हम सब गुरु भाइयों के बीच होते, तब उनके पास जो छोटी मोटी सिद्धियां या चमत्कार होते, उनका प्रदर्शन वे हमारे सामने अवश्य ही करते, और मैं उनके तुरन्त प्रभाव देने वाले चमत्कारों और साधना रहस्यों को जानकर आश्चर्यचंकित हो जाता।

आज के युग में सामान्य गृहस्थ व्यक्तियों के लिए उच्चकोटि की गहन गंभीर साधनाओं की अपेक्षा तुरन्त फल देने वाली और नित्य प्रति काम आने वाली साधनाओं की ज्यादा उपयोगिता है, इन साधनाओं में समय कम लगता है, और इसका फल भी साधक को हाथों हाथ प्राप्त हो जाता है। जब उसका मन चाहा कार्य पूरा हो जाता है तो उसे असीम आनन्द और तृप्ति सी अनुभव होती है।

आगे मैं उन्हीं छोटी मोटी साधनाओं को अपने गुरू भाइयों के लिए प्रस्तुत कर रहा हूं, ये सभी साधनाएं प्रामाणिक है, और इनका तुरन्त फल प्राप्त होता है। मैंने स्वयं इन साधनाओं को आजमाया है और प्रत्येक बार मुझे इसमें सफलता मिली है। वास्तव में ही इन साधनाओं को आवश्यकता पड़ने पर आजमाना चाहिए और उपयोग करना चाहिए।

१- लक्ष्मी प्रयोग

यह प्रयोग मुझे हल्ली महाराज से मिला था, वे हिमालय के महत्वपूर्ण तांत्रिक रहे है और उनका सम्मान अत्यधिक है, एक बार उन्होंने मुझ पर प्रसन्न हो कर यह प्रयोग समझाया था।

उनके अनुसार संक्रांति के दिन या तो ठीक दोपहर को या ठीक मध्य रात्रि को यह प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए, इस प्रयोग में 'श्वेत वाजा' का उपयोग होता है, वे कई बार एक लाइन दोहराते थे-

स्यालसिंगी श्वेतवाजा क्या करेगा रूठा राजा

अर्थात् यदि किसी को सियारसिंगी और श्वेतवाजा का प्रयोग ज्ञात हो तो फिर राजा भी रूठ जाय तो उसका क्या अहित कर लेगा ?

खैर, मैं यहां पर लक्ष्मी प्रयोग दे रहा हूं, संक्रांति के दिन दोपहर को या आधी रात को थाली में (यह थाली लोहे की या स्टील की नहीं होनी चाहिए) केसर के स्वस्तिक का चिन्ह बनावे और उस स्वस्तिक पर चावलों की ढेरी बना कर उसके ऊपर छोटा सा पीला कपड़ा रख दे और उस पर श्वेतवाजा (न्यौछावर ६०/रू.) स्थापित कर उस पर केसर का तिलक करे, और फिर उस श्वेत वाजा के चारों ओर दस दीपक लगावे, ये दसों दिशाओं के प्रतीक है, इसके बाद कमल गट्टे की माला से निम्न मंत्र की दस माला मंत्र जाप करें।

तांत्रोक्त मंत्र

ॐ श्रीं श्रुं श्रें श्रौं लक्ष्म्यै श्रौं श्रें श्रुं श्रीं फट्॥

इसके बाद उस श्वेतवाजा को किसी ताबीज में भर कर या तो हाथ पर बांध ले, या अपने घर के सन्दूक में रख दें। यह छोटा सा प्रयोग आश्चर्यजनक प्रयोग है इस प्रयोग को सम्पन्न करने के बाद दसों दिशाओं से लक्ष्मी आने लगती है, यदि व्यापारी चाहे, तो इस श्वेतवाजा को अपनी दुकान में अच्छे स्थान पर रख दें या जहां रूपये पैसे रखते है, उसमें रख दें अथवा बैठने की गद्दी के नीचे इसको रख दे, और फिर वे स्वयं इस छोटे प्रयोग का चमत्कार देख सकते है।

वास्तव में ही श्वेतवाजा तंत्र के क्षेत्र में बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखता है, और लक्ष्मी प्राप्ति के लिए इसका प्रयोग इसी ढंग से सम्पन्न होता है।

मैं अगले महीनों की संक्रातियों की तारीखें स्पष्ट कर रहा हूं-

१४-४-८९	१५-५-८९	१५-६-८९
१७-७-८९	१७-८-८९	१६-९-८९

उपरोक्त तारीखों में संक्रांति पर्व है, जिस दिन यह प्रयोग सम्पन्न हो सकता है, यों किसी भी पण्डित से संक्रांति की तारीख ज्ञातकर यह प्रयोग सम्पन्न किया जा सकता है।

२- वशीकरण-सम्मोहन

तंत्र के क्षेत्र में सियालसिगी का अत्यन्त महत्व है, बिहार में ऐसे सियाल प्राप्त हो जाते है, जो अपने ऊपर सींग रखते है, उनका यह सींग तंत्र में उपयोगी होता है।

वशीकरण और सम्मोहन के क्षेत्र में यह अपने आप में अद्वितीय प्रयोग है, मैंने इसका अपने जीवन में कई गृहस्थ व्यक्तियों और यहां तक की तांत्रिकों तथा सन्यासियों पर प्रयोग किया है,और हर बार मुझे सफलता मिली है।

किसी भी मंगलवार की रात्रि को यह प्रयोग संपन्न होता है। आप जिसको भी अपने वश में करना चाहे, वह चाहे, पुरूष हो, चाहे स्त्री वह चाहे आपका विरोधी हो या आपका मित्र, वह चाहे आपका अधिकारी हो, या नौकर इसके माध्यम से निश्चय ही उसको वश में किया जा सकता है, और आगे के जीवन में उससे मन चाहा कार्य सम्पन्न करवाया जा सकता है।

मंगलवार की रात्रि को लोहे या स्टील की थाली को रख कर उसके मध्य में कुंकुम से त्रिकोण बनावे, और त्रिकोण के मध्य में एक बिन्दी लगा कर उस पर सियार सिंगी (न्यौछावर ६०)रू. रख दें। और फिर त्रिकोण के तीन कोनों पर तीन दीपक लगावे और मूंगे की माला से मंत्र जप करे।

तांत्रोक्त मंत्र

ॐ ह्लीं ह्लीं अमुकं वश्यमानाय शीघ्रं फट् ।।

इस प्रयोग में उसका नाम उच्चारण करना जरूरी है जिसे आप वश में करना चाहते है, ऊपर मंत्र में जहां 'अमुक' शब्द आया है वहां पर उस पुरूष या स्त्री का नाम उच्चारण करना चाहिए. जिसे आप सम्मोहित करना चाहते हैं, या वश में करना चाहते है, इसमें मंगलवार की रात्रि को ग्यारह माला मंत्र जाप करना आवश्यक है।

सियार सिंगी को स्थापित करके ऊपर काजल की डिब्बी या या मिठाई का टुकड़ा रख देना चाहिए। दूसरे दिन सुबह यदि आपके लिए संभव हो तो वह मिठाई का टुकड़ा उसे खिला देना चाहिए, जिसे वश में करना हो, यदि यह संभव न हो तो काजल की डिब्बी रख दें और दूसरे दिन उसमें से थोड़ा सा काजल अपनी उंगली पर ले कर उस पुरूष या स्त्री के कपड़ों पर हलके से लगा दें, यदि यह भी संभव न हो तो सियार सिंगी पर शक्कर की पुड़िया बांध कर रख दे और दूसरे दिन वह शक्कर चाय या दूध में मिला कर उसे पिला दे।

आप ऐसा कर के देखिए और आपको चमत्कार सा अनुभव होगा। जो आपका बिल्कुल विरोधी था, या जो आपसे बात ही नहीं करना चाहता था उसे आप अपने अनुकूल पा कर सुखद आश्चर्य से भर जायेंगे।

३- काया कल्प

यह अपने आप में अत्यन्त दुर्लभ और महत्वपूर्ण प्रयोग है, इस प्रयोग से मैंने पूरे शरीर का काया कल्प होते हुए अनुभव किया है, सफेद बाल वापिस काले होने लग जाते है, शरीर की झुर्रिया मिटने लग जाती है और शरीर में जो रोग होते है वे समाप्त होने लग जाते है।

यह प्रयोग किसी भी रविवार की रात्रि को सम्पन्न किया जाता है, ठीक आधी रात को (आधी रात का तात्पर्य रात के ग्यारह बजे से दो बजे तक का समय है) यह प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए।

साधक आसन बिछा कर बैठ जाय और सामने स्टील की या लोहे की थाली रख दें। और उस थाली में कुंकुम से ५२ बिन्दियां लगाये, मध्य में अलग से एक बड़ी बिन्दी लगा कर उस पर "शूकर दन्त" स्थापित कर दें। और थाली के चारों ओर ९ दीपक जला दें, इसमें किसी भी प्रकार के तेल का प्रयोग किया जा सकता है।

शेष पृ. ४१ पर

किसी को भी सम्मोहित करने की शक्ति आप में है

आप अपनी इस शक्ति को पहिचानिये

हम सब लोगों के परिचितों में कोई न कोई ऐसा व्यक्ति अवश्य होता है, जो उत्साह, जोश और उमंग से भरा हुआ होता है, जिसकी आंखों में एक विशेष प्रकार की सम्मोहन शक्ति और शरीर में आकर्षण, प्रभाव होता है। उससे मिलने पर हमें ऐसा लगता है, कि काश! हम भी ऐसे हो पाते। ऐसे लोग जीवन में प्रत्येक क्षेत्र में सफल होते है, उन्नति की ओर निरन्तर अग्रसर होते रहते है और हंसते खेलते जीवन बिता देते है।

इसके बावजूद हम अपने आपको थका हुआ टूटा हुआ, हारा हुआ सा अनुभव करते है। ऐसा लगता है कि हम में किसी प्रकार का जोश, उमंग और उत्साह रहा ही नहीं है। हमारा जीवन एक बंधा हुआ सा जीवन बन गया है, सुबह उठना, स्नान करना, थके हुए भारी शरीर से दुकान या नौकरी पर चले जाना, मरी हुई चाल से लौट कर आना और खाना खा कर सो जाना; इसके अलावा हमें न तो अपने जीवन से रस रहा है, न नये खतरे उठाने की हिम्मत रही है और न जीवन में किसी प्रकार की उमंग या उत्साह ही रहा है।

इसका कारण क्या है ?

भगवान ने सबको एक जैसा शरीर, और एक जैसे संवेग दिये है, वस्तुतः मनुष्य का शरीर एक ऐसी मशीन है जिसके किसी भाग का यदि हम कुछ समय तक उपयोग नहीं करते है तो वह भाग निष्क्रिय हो जाता है। यदि हम काफी समय से मुस्कराये नहीं है, तो शरीर या हमारे संवेग मुस्कराना भूल जाते है, यदि हमें मुस्कराना भी पड़ता है, तो खींच-तान कर मुस्कराते है, और वह मुस्कराहट साफ साफ नकली दिखाई देने लगती है। हमारे शरीर में एक विशेष प्रकार की गति या शक्ति होती है, यदि हम उस शक्ति का उपयोग नहीं करते तो वह शक्ति व्यर्थ में ही बरबाद होती रहती है। हम सभी में शक्ति का अतुल भंडार भरा हुआ है यदि हम इस शक्ति का उपयोग करना शुरू करें या मैं कहूं कि इस शक्ति का मात्र दस पन्द्रह प्रतिशत भी हम उपयोग कर सकें, तो हम अपने जीवन में आमूल-चूल परिवर्तन कर सकते है, और हम जीवन का आनन्द सही अर्थो में ले सकते है।

और इसके लिए जरूरी है सम्मोहन प्रक्रिया

आज का प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही समस्याओं और तनावों से घिरा हुआ है यहां तक कि हमारी पत्नी के भी अपने प्रकार के तनाव है, और वह उन तनावों से मन ही मन झूंझती रहती है, चाहें वह हम से कहे या न कहे। इसी प्रकार हमारी पुत्री, हमारे पुत्र, और हमारे रिश्तेदार, परिचित आदि सभी अपने अपने तनावों और परेशानियों से घिरे हुए है, और ये छोटे छोटे तनाव आपस में सामजंस्य पैदा नहीं करने देते, प्रयत्न करने पर भी मधुर संबंध नहीं हो पाते, हमारी सारी बुद्धि, हमारी सारी चतुराई धरी की धरी रह जाती है, न तो हम अपनी बेटी को अपनी आज्ञा मनवा सकते है, न हम अपनी पत्नी को तनाव मुक्त कर सकते है, और न हम अपने अधिकारी को अपने अनुकूल बना सकते है।

आज के युग में सफलता के लिए यह जरूरी है, कि आपके सम्पर्क में आने वाला प्रत्येक व्यक्ति आपसे सम्मोहित हो। आपकी आंखों में, आपके चेहरे में और आपके व्यक्तित्व में कुछ ऐसा आकर्षण हो, जिससे कि सामने वाला पुरूष या स्त्री आपसे मिलने के लिए आतुर हो। उनकी इच्छा और आकांक्षा हो कि वह आपके साथ कुछ क्षण बिताये, आप जो भी आज्ञा दे या सलाह दे उसे दौड़ कर पूरा करे, और यह तभी हो सकता है, जब आप इस क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकें।

क्या यह संभव है ?

अमरिका के प्रसिद्ध वैज्ञानिक डा. ब्रूम ने अपनी शोध के बाद यह निष्कर्ष निकाला है कि प्रत्येक व्यक्ति में एक विशेष प्रकार की सम्मोहन शक्ति होती है जिसके माध्यम से वह अपने सम्पर्क में आने वाले किसी भी व्यक्ति को सम्मोहित कर सकता है, उसके विचारों को अपने अनुकूल बना सकता है और उससे मन चाहा कार्य करवा सकता है, परन्तु दुर्भाग्य से उस शक्ति के स्रोत का हमें पता नहीं है। इसमें कोई दो राय नहीं कि कमरे

आज के युग में सफलता के लिए यह जरूरी है, कि आपके सम्पर्क में आने वाला प्रत्येक व्यक्ति आपसे सम्मोहित हो। आपकी आंखों में, आपके चेहरे में और व्यक्तित्व में कुछ ऐसा आकर्षण हो, जिससे कि सामने वाला पुरूष या स्त्री आपसे मिलने के लिए आतुर हो। उनकी इच्छा और आकांक्षा हों कि वह आपके साथ कुछ क्षण बिताये। आप जो भी आज्ञा दे या सलाह दें, उसे दौड़ कर पूरा करे, और यह तभी हो सकता है, जब आप इस क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकें।

में स्वर्ण का अतुल भंडार पड़ा हुआ है, परन्तु जब तक हमें उसके द्वार का पता नहीं चलेगा, जब तक हमें दरवाजा खोलने की क्रिया का ज्ञान नहीं होगा, तब तक हम उस स्वर्ण भण्डार तक नहीं पहुंच सकेगे। स्वर्ण भण्डार सम्पन्नता और आर्थिक विपुलता कुछ ही कदमों पर हैं, परन्तु दरवाजा खोलने की क्रिया का ज्ञान न होने की वजह से हम जीवन भर दरिद्री और असहाय बने रहते है।

पर यदि कोई सही मार्गदर्शक मिल जाय, हमें ताला खोलने और दरवाजा खोल कर अन्दर जाने की युक्ति बता दें तो जीवन में सब कुछ प्राप्त हो सकता है।

ठीक इसी प्रकार हमारे शरीर में सम्मोहन का अतुल भण्डार छिपा हुआ हैं, जिसके माध्यम से हम किसी भी पुरुष या स्त्री को पूर्णतः सम्मोहित कर सकते है, और

हमेशा हमेशा के लिए अपने वश में कर सकते है। पुत्री या पुत्र पर सम्मोहन क्रिया सम्पन्न कर उसके विचारों को अपने अनुकूल बना सकते है। पुत्र को व्यापार मार्ग पर लगा सकते है, या उसकी गलत प्रवृत्तियों पर अ ंकुश लगा सकते है। पत्नी के झगड़ालू स्वभाव को नियंत्रित कर उसे अपने अनुकूल बना सकते है। अपने अधिकारी को सम्मोहन भावना देकर इस योग्य बना सकते है कि वह स्वयं हमसे बात करने के लिए आतुर हो और हमारा कार्य करने में उसे प्रसन्नता अनुभव हो, यही नहीं अपितु इस सम्मोहन शक्ति के माध्यम से हम अच्छे वक्ता बन सकते है, समाज के लोगों पर अपना प्रभाव स्थापित कर सकते है, पार्टनर को अपने अनुकूल बना सकते है, और एक प्रकार से देखा जाय तो हम सभी परिचित लोगों के दिलों पर शासन कर सकते है।

और ऐसा होने पर हमारे जीवन का तनाव अपने आप समाप्त हो जायेगा, हमारे जीवन की बाधाएं और अड़चनें अपने आप दूर हो जायेगी, हम पहले की अपेक्षा

ज्यादा सुखी, ज्यादा सफल, और ज्यादा सम्पन्न हो सकेंगे।

कैसे खोलें द्वार सम्मोहन का

पिछले कुछ समय से सम्पूर्ण विश्व के वैज्ञानिक अपने शरीर स्थित सम्मोहन शक्ति को बढ़ावा देने के लिए प्रयत्नशील है। उन्होंने प्रयोगों के माध्यम से यह अनुभव किया है, कि यदि हम किसी भी युक्ति से अपने मन पर नियंत्रण स्थापित कर सके, और अपने शरीर स्थित सम्मोहन नामक इन्द्रिय को चेतना युक्त बना सके, तो हम स्वतः इस क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकते हैं। इसके लिए कोई लम्बा चौड़ा परिश्रम करने की जरूरत नहीं है, हमारे शरीर में सैकड़ों इन्द्रियां है कोई इन्द्रिय चेतना युक्त होने पर हम मुस्कराते है, दूसरे प्रकार की इन्द्रिय हमारे रोने में सहायक होती है, तीसरे प्रकार की इन्द्रिय विचारों पर नियंत्रण प्राप्त करती है, ठीक इसी प्रकार से पूरे शरीर को और विशेष कर हमारी आंखों को पूर्ण सम्मोहन शक्ति युक्त बनाने में सुषुम्ना नामक इन्द्रिय पूर्ण रूप से सहायक होती है, अधिकतर यह सुप्तावस्था में ही होती है, परन्तु यदि इसे जाग्रत और चैतन्य कर दिया जाय तो स्वतः ही सारा शरीर चेतना युक्त आकर्षण युक्त और सम्मोहन युक्त बन जाता है, ऐसे शरीर के लिए यह जरूरी नहीं है कि आप लम्बे चौडे डील डौल के हों, या आप मोटे ताजे हो, आवश्यकता इस बात की है, कि आपके शरीर के रोम रोम से सम्मोहन जाग्रत अवस्था में हो, आपकी आंखों में कुछ ऐसा, तेज, कुछ ऐसा आकर्षण और कुछ ऐसा प्रभाव हो, जो दूसरों को बरबस आपकी और आकृष्ट कर सके, आपके पास आने के लिए प्रेरित कर सके, और आपसे बातचीत करने में आपकी आज्ञा मानने में आपके अनुरूप बनने में वह अपने आपको गौरवान्वित अनुभव कर सके, और ऐसा हो सकता है, निश्चय ही ऐसा हो सकता है। पश्चिम के वैज्ञानिकों ने प्रयोगों द्वारा यह सिद्ध किया है, कि ऐसी शक्ति प्रत्येक स्त्री पुरुष में है, आवश्यकता उस शक्ति का उपयोग करने में है।

और सुषुम्ना जाग्रत होते ही आपकी आंखों में सम्मोहन प्रभाव इतना तीव्र हो जाता है कि आप किसी को भी मात्र देखने से ही उसे अपने वश में कर सकते हैं और जीवन भर उसे अपने अनुकूल बनाये रख सकते है।

और सुषुम्ना को जाग्रत यों की जाती है

पश्चिम के वैज्ञानिक भी इस निर्णय पर पहुंचे है, कि सम्मोहन और आकर्षण प्रभाव उत्पन्न करने के लिए सुषुम्ना ग्रन्थि का जाग्रत होना आवश्यक है, और इसके लिए उन्होंने भी इस बात को स्वीकार किया है कि भारतीय पद्धति ज्यादा वैज्ञानिक, ज्यादा स्पष्ट और ज्यादा प्रामाणिक है। हरवर्ट विश्वविद्यालय में डा. कीव ने बिजली के झटकों के द्वारा शरीर स्थित सुषुम्ना नाड़ी पर बिजली के झटके दिये गये, उन स्त्री पुरुषों के शरीर के आकर्षण में लगभग ३० प्रतिशत वृद्धि हुई, उनकी बातचीत में, उनकी आंखों में कुछ ऐसा सम्मोहन पैदा हुआ कि पहले की अपेक्षा ज्यादा लोग उन्हें चाहने लगे और वे अपने कार्य में तथा अपने व्यापार में ज्यादा सफल हुए।

पर इस युक्ति की न्यूनता यह है, कि महीने में या दो महीने में एक बार अवश्य ही सुषुम्ना नाड़ी पर बिजली के झटके लेने पड़ते है, जो कि ज्यादा उचित नहीं है, इससे धीरे धीरे सुषुम्ना नाड़ी स्वयं कमजोर होने लगती है और उसके कई गलत प्रभाव भी पैदा होने लगते है।

तिब्बत में विशेष सुइयों के माध्यम से भी सुषुम्ना नाड़ी को छेदा जाता है और उसको निरन्तर सक्रिय बनाये रखने के लिए एक पतला सा तार सुषुम्ना नाड़ी

पर पिरो दिया जाता है, परन्तु तिब्बत के योगियों ने ही अपनी इस पद्धति की अपेक्षा भारतीय पद्धति या भारतीय साधना को ज्यादा महत्व दिया है।

क्या है भारतीय साधना

एक स्थान पर एक हजार पत्थर पड़े हुए है, या तो आप स्वयं एक एक पत्थर उठा कर दूसरे स्थान पर रख दें या किसी अनुभवी मजदूर को कुछ पैसे दे कर यह कार्य सम्पन्न करवा ले, आपका उद्देश्य तो वहां से पत्थर हटा कर दूसरे स्थान पर रखना था, पर इसके लिए दोनों तरीके हैं, पहले तरीके की अपेक्षा दूसरा तरीका ज्यादा अनुकूल है, क्योंकि एक तो इससे आपके समय की बचत होती है और दूसरा वह मजदूर अनुभवी होने के कारण अपने हाथ पैरों को बचा कर वह कार्य जल्दी सम्पन्न कर लेगा।

ठीक इसी प्रकार 'सम्मोहन यंत्र" का है, या तो आप स्वयं पूर्ण सवा लाख मंत्र जप सम्पन्न कर उस यंत्र को ऊर्जा युक्त और चैतन्य बनावे, या कुशल पंडित कुछ पैसे लेकर इस प्रकार के यंत्र को मंत्र सिद्ध चैतन्य प्राण युक्त बना दे। इस प्रकार का महत्वपूर्ण और प्रभावयुक्त सम्मोहन यंत्र बनाने पर व्यय मात्र १९५)रू. व्यय आता है। जो कि उसकी दक्षिणा और पूजन सामग्री से संबंधित होती है।

ठीक जिस प्रकार से कोट पहिन लेने से सीने पर निरन्तर गर्मी का अहसास होता रहता है, उसी प्रकार यह महत्वपूर्ण यंत्र किसी धागे में पिरो कर गले में धारण करने से या बांह पर बांधने से पूरे शरीर में निरन्तर विद्युत प्रवाह होता रहता है जो कि सुषुम्ना जाग्रत से संबंधित होता है। जिस प्रकार सिर दर्द की टिकिया मुंह के द्वारा पेट में लेने से उसका स्वतः अपने आप प्रभाव मस्तिष्क पर हो जाता हैं और मस्तिष्क अर्थात् सिर दर्द समाप्त हो जाता है, उसी प्रकार यह यंत्र बांह पर या गले में लटकते रहने से उसकी तेजस्वी किरणे और उसका मंत्र विद्युत प्रवाह सीधा सुषुम्ना नाड़ी पर होता रहता है और कुछ ही दिनों में सुषुम्ना नाड़ी जाग्रत हो जाती है।

और जब सुषुम्ना जाग्रत होती है, तो निश्चय ही उसका सारा शरीर आकर्षक, प्रभाव युक्त और चुम्बकीय हो जाता है। उसकी आंखों में एक विशेष प्रकार की सम्मोहन शक्ति आ जाती है, जिसके फलस्वरूप वह किसी को भी वश में कर सकता है, उसको सम्मोहित कर सकता है, और अपने जीवन में पूर्ण सफलता पा सकता है।

इस प्रक्रिया को और तीव्र करने के लिए यदि निम्न शब्दों का नित्य आधे घण्टे तक उच्चारण करें या दूसरे शब्दों में मन्त्र जप करे तो यह प्रक्रिया कुछ ही दिनों में सम्पन्न हो जाती है, और यह सम्मोहन प्रवाह जीवन भर बना रहता है।

इसके लिए यह जरूरी नहीं है कि आप स्नान कर के शुद्ध वस्त्र पहिन के धोती धारण करके एक स्थान पर बैठ कर ही मन्त्र जप करे, और न इसमें घी का दीपक, अगरबत्ती या पूजन सामग्री की जरूरत होती है, यह मन्त्र जप तो स्नान करते हुए या स्नान करने के बाद कपड़े पहिनते हुए, या जब भी घण्टे आधे घण्टे का समय मिल जाय इस मन्त्र का उच्चारण कर सकते हैं, इन शब्दों का भी सीधा प्रवाह सुषुम्ना नाड़ी पर पड़ता है, और वह जल्दी उत्तेजित और जाग्रत हो जाती है।

मंत्र

।। ॐ क्लीं क्लीं क्रीं क्रीं हुं हुं फट् ।।

और सुषुम्ना जाग्रत होते ही आपकी आंखो में सम्मोहन प्रभाव इतना तीव्र हो जाता है कि आप किसी को भी मात्र देखने से ही उसे अपने वश में कर सकते है और जीवन भर उसे अपने अनुकूल बनाये रख सकते है।

धूमावती जयन्ती के अवसर पर

दुर्लभ गोपनीय प्रयोग

धूमावती जयन्ती ज्येष्ठ शुक्ल ८ रविवार अर्थात ११-६-८९ को है उच्च कोटि के साधक पूरे वर्ष भर इस दिन की प्रतीक्षा करते हैं, जब कि वे महाविद्याओं में सर्वश्रेष्ठ महाविद्या को सिद्ध कर सके और इसके माध्यम से भूत प्रेत आदि इतर प्राणियों से मनचाहा कार्य करवा सके और परलोक गत आत्माओं से सम्पर्क स्थापित किया जा सके।

योगीराज सहजानन्द जी के माध्यम से एक अद्वितीय दुर्लभ गोपनीय और महत्वपूर्ण साधना—

धूमावती साधना के बारे में कहा गया है, कि जिस साधक ने जीवन में भले ही अन्य साधनाएं सम्पन्न की हो, भले ही वह उच्चकोटि का योगी और सिद्ध रहा हो, पर उसे अपने जीवन में तब तक पूर्णता प्राप्त नहीं हो सकती, जब तक कि वह धूमावती को सिद्ध न कर दें।

मेरे गुरूदेव धूमावती सिद्ध साधक थे और उन्होंने अत्यन्त गोपनीय एवं दुर्लभ साधना प्रयोग से धूमावती को सिद्ध किया था, इसके माध्यम से वे पृथ्वी लोक के अलावा अन्य लोकों में रहने वाले प्राणियों से संबंधित स्थापित किये हुए ही थे, साथ ही साथ वे किसी भी मनोवांछित आत्मा को वायुमण्डल से बुला कर अपने सामने उपस्थित कर देते थे और उससे मनोवांछित जानकारी प्राप्त कर लेते थे, इन आत्माओं में उच्चकोटि के वैज्ञानिक, संगीतज्ञ, विद्वान और कलाकार होते थे।

जब मेरे गुरूदेव मूड में होते तो, उच्चकोटि के संगीतज्ञों की आत्माओं को बुला लेते, और उनसे घण्टे दो घण्टे संगीत सुनते रहते, उन्होंने मुझे कई बार नृत्य कार्यक्रम भी दिखाये। इसके अलावा इन आत्माओं के माध्यम से वे किसी के भी जीवन के भूत भविष्य, वर्तमान को जान सकते थे, उन्हें न तो पंचांगुली साधना सम्पन्न करने की

जरूरत पड़ी और न कर्णपिशाचिनी साधना ही। वे किसी आत्मा को बुला कर किसी के भी जीवन का भूतकाल जान लेते थे। यदि किसी का भविष्यकाल जानना होता था तो उस आत्मा के माध्यम से ही पूरी पूरी जानकारी प्राप्त कर लेते थे, यहीं नहीं अपितु वे इन आत्माओं से घण्टों बतियाते रहते थे, और उनके लिए कुछ भी कठिन और असंभव नहीं था।

जहां भूत प्रेत थे गुलाम उनके

गुरू के सानिध्य में जाने के बाद मेरी यह आशंका तो निर्मूल हो ही गई कि जीवन में भूत प्रेत होते भी है या नहीं। उनके साथ रह कर मैंने तीन बातों का ज्ञान प्राप्त किया, एक तो यह कि इस संसार में भूत प्रेतों का अस्तित्व है, और जिस प्रकार पृथ्वी तल पर मानव जाति विचरण करती रहती है, ठीक उसी प्रकार हमारे चारों ओर भूत प्रेत भी निरन्तर विचरण करते रहते हैं, और दूसरा ज्ञान यह प्राप्त हुआ कि भूत प्रेत साधक के लिए ज्यादा विश्वास पात्र अनुकूल एवं सुखदायक हैं। जीवन में आदमी तो धोखा दे सकता है, पड़ौसी तो विश्वासघात कर सकता है, परन्तु ये भूत प्रेत अत्यन्त ही सरल, निष्कपट और मददगार होते है। ये कभी भी जीवन में साधक को न तो धोखा देते है, और न विश्वासघात ही करते है। तीसरा ज्ञान मुझे यह हुआ कि मैं लगभग आठ वर्षो तक गुरू के सानिध्य में उनके ही आश्रम में रहा, और मैंने देखा कि सुबह चार बजे से लगाकर रात को ग्यारह बजे तक ये भूत प्रेत पूरे आश्रम का छोटे से छोटा और बड़े से बड़ा कार्य करते रहते थे, सफाई करना, पानी भरना, गायों का दूध दुहना, आश्रम के सभी शिष्यों के लिए भोजन पकाना और रात को पूरे आश्रम की देख भाल करना आदि सब कार्य इन भूत प्रेतों के जिम्मे था, और पूरे छः वर्षों में एक भी अवसर ऐसा नहीं आया कि किसी काम में कोई न्यूनता रही हो।

मुझे अच्छी तरह से ज्ञात है, कि आश्रम की आय का कोई साधन नहीं था, गुरूदेव किसी से न तो किसी प्रकार की याचना करते थे, और न किसी से दान आदि ही स्वीकार करते थे। इसके बावजूद भी आश्रम में धन की कोई कमी नहीं रहती थी, सैकड़ों लोग पूज्य गुरूदेव के दर्शन के लिए आते उनको भोजन कराया जाता, गुरूदेव के जन्म दिवस पर तो सैकड़ों लोगों को कम्बल, वस्त्र और यहां तक कि आभूषण भी प्रदान किये जाते। इतना होने के बावजूद भी आश्रम में धन की कोई कमी नहीं रहती थी, उलटे यह चिन्ता रहती थी कि जो बेतहासा धन निरन्तर भूत प्रेतों के माध्यम से आश्रम में आ रहा है, इसको व्यय कहां किया जाय, और कैसे किया जाय ?
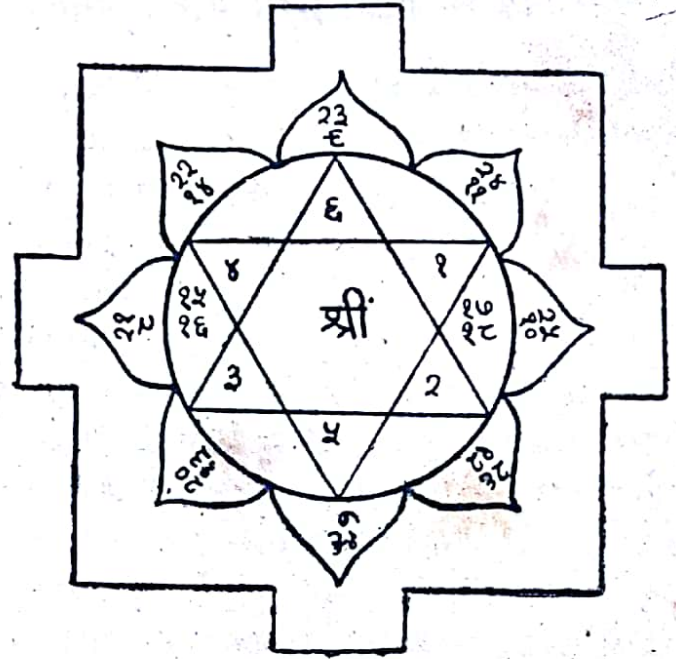
वास्तव में ही धूमावती इस प्रकार की सिद्धियों के लिए अद्वितीय साधना है, और यह पूर्ण रूप से सात्विक सुखदायक, और आनन्दप्रद साधना है। जो गायत्री उपासक है, जो गृहस्थ है, सात्विक जीवन व्यतीत करने वाला व्यक्ति है, उसके लिए यह साधना अत्यन्त महत्वपूर्ण और अनुकूल है।

और अब तो विज्ञान भी मानने लगा है

पश्चिम में जो शोध हो रहे है, उसके आधार पर पश्चिम के वैज्ञानिकों ने यह स्वीकार किया है, कि पृथ्वी तल पर भूत प्रेतों का अस्तित्व निश्चित रूप से है और उनमें जरूरत से ज्यादा बल, साहस, और क्षमता है। यदि वे नियंत्रण में हो जाते है, तो उनके द्वारा असंभव से असंभव कार्य भी सम्पन्न किये जा सकते है। मशीनों के रख रखाव पर जरूरत से ज्यादा व्यय होने लगा है। उनके तोड़ फोड़ की गुंजायस बनी रहती है उन पर कार्य करने वाले मजदूरों की समस्या बराबर चिन्तित बनाये रखती है, इसके बावजूद यदि इन इतर प्राणियों-भूत प्रेत आदि को नियंत्रित और अपने अनुकूल बनाया जाय तो उससे सौ गुना ज्यादा काम हो सकता है, ज्यादा अच्छे तरीके से हो सकता है और बिना किसी अड़चन या बाधा के हो सकता है।

इसके लिए उन्होंने इन इतर प्राणियों को वश में करने के कई प्रयोग आजमाये है, पर उन्होंने भी यह स्वीकार किया है, कि धूमावती प्रयोग के माध्यम से हम ज्यादा अच्छे तरीके से इस कार्य को सम्पन्न कर सकते है, आज पश्चिम में धूमावती प्रयोग पर ७५ से ज्यादा अंग्रेजी में लिखी हुई पुस्तकें बाजार में उपलब्ध है, और वहां के वैज्ञानिक, वहां के लोग और वहां के बुद्धिजीवी इस साधना को सिद्ध करने के लिए बेताब है।

गोपनीय प्रयोग

मंत्र महोदधि, मंत्र महार्णव, शाक्त प्रमोद आदि ग्रन्थों में धूमावती साधना के बारे में प्रयोग दिये है, परन्तु मेरा अनुभव यह है कि इस प्रकार के प्रयोग से धूमावती सिद्ध नहीं हो सकती। मैंने प्रारम्भ में इन ग्रन्थों में लिखे हुए तरीके से धूमावती को सिद्ध करने का प्रयत्न किया था, पर मुझे इसमें सफलता नहीं मिली, पर जब मैं गुरूदेव के चरणों में पहुँचा तो लगभग चार वर्षों के बाद उन्होंने अत्यन्त गोपनीय और दुर्लभ एक दिवसीय साधना प्रयोग बताया, जिसके माध्यम से मुझे पहली बार में ही सफलता मिल गई, और इतने वर्ष बीतने के बावजूद भी मेरी साधना में कोई न्यूनता नहीं आई और आज मैं जो इतना बड़ा आश्रम संचालित कर रहा हूँ, नित्य सैकड़ों लोगों को भोजन करवा रहा हूँ, वस्त्र प्रदान कर रहा हूं, यह सब धूमावती साधना के माध्यम से ही संभव है। इसके माध्यम से मेरे आश्रम के सारे कार्य भूत प्रेत आदि करते है, और आश्रम की रक्षा, आश्रम की व्यवस्था और आश्रम के कार्य जिस सुचारू रूप से ये इतर प्राणी कर रहे है, उसको देखते हुए मैं सभी साधकों को सलाह दूंगा कि वे अवश्य ही धूमावती जयन्ती दिवस का उपयोग करे, इस साधना को सिद्ध करे, और जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त करे।
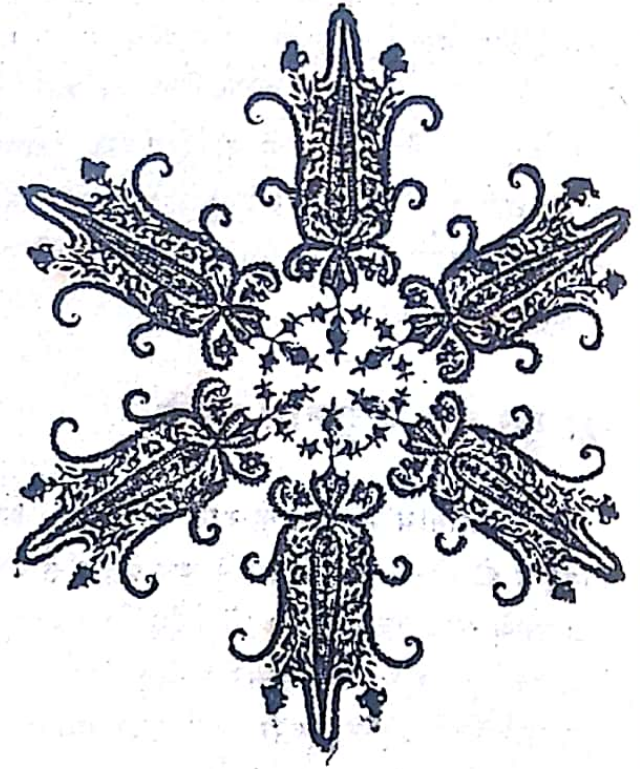
मैं पत्रिका के महत्वपूर्ण पाठकों और साधकों के लिए इस दुर्लभ प्रयोग को स्पष्ट कर रहा हूं, वे स्वयं इस दिन इस प्रयोग को सम्पन्न कर देख सकते है, कि यह प्रयोग कितना अधिक प्रामाणिक, कितना अधिक यथार्थ और कितना अधिक महत्वपूर्ण है, यदि साधक पूर्ण क्षमता और विश्वास के साथ इस एक दिवसीय साधना को सम्पन्न

करता है, तो अवश्य ही उसे पूर्ण सफलता प्राप्त होती ही है।

साधना प्रयोग

११-६-८९ धूमावती जयन्ती के दिन साधक ठीक दोपहर को यह प्रयोग सम्पन्न करे। शास्त्रों में विधान है, कि जब व्यक्ति की छाया व्यक्ति के शरीर में ही समाहित हो तब यह साधना प्रारंभ करनी चाहिए। इस दृष्टि से यह समय इस दिन दोपहर को १२ बज कर ४२ मिनट से २ बज कर १० मिनट तक संपन्न होता है, इस अवधि में ही यह प्रयोग संपन्न करना चाहिए।

इसके लिए दुर्लभ और महत्वपूर्ण धूमावती यंत्र (न्यौछावर १९५) रू.) धूमावती चित्र (सर्वथा मुफ्त में) और धूमावती माला ८० रू.) की आवश्यकता होती है। अपने सामने तांबे का एक पात्र स्थापित करे उसके मध्य में पीली सरसों की ढेरी बनावे, सौर उस पर धूमावती यंत्र को स्थापित कर दे। इससे पहले ही धूमावती चित्र को कांच के फ्रेम में मढ़वा कर पीछे स्थापित कर देना चाहिए।

फिर सामने मिट्टी का एक बड़ा सा दीपक रखे, और उसमें सरसों का तेल भर कर रूई की बत्ती बना कर उसको जलावे, दीपक का मुंह साधक की ओर होना चाहिए।

इसके बाद साधक स्नान कर लाल धोती पहिन कर अपने कंधों पर भी लाल धोती ही डाले और धूमावती यंत्र की संक्षिप्त पूजा करे। इस पूजन में उस यंत्र को जल से स्नान करा कर उसे पौछ कर केसर का तिलक करे, उस पर अक्षत (चावल) चढावे और पुष्प समर्पित करे। इसके बाद निम्न प्रकार से अपने शरीर को स्पर्श करता हुआ, अंग न्यास करे।

आज मैं जो इतना बड़ा आश्रम संचालित कर रहा हूं नित्य सैकड़ों लोगों को भोजन करवा रहा हूं, वस्त्र प्रदान कर रहा हूं ये सब धूमावती साधना के माध्यम से ही संभव है, इसके माध्यम से मेरे आश्रम के सारे कार्य भूत प्रेत आदि करते है, और आश्रम की रक्षा, आश्रम की व्यवस्था और आश्रम के कार्य जिस सुचारू रूप से ये इतर प्राणी कर रहे है, उसको देखते हुए मैं सभी साधकों को सलाह दूंगा कि वो अवश्य ही धूमावती जयन्ती दिवस का उपयोग करे, इस साधना को सिद्ध करे, और जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त करे।

अंग न्यास

ॐ धां हृदयाय नमः,
ॐ धीं शिरसे स्वाहा
ॐ धूं शिखायै वषट
ॐ धैं कवचाय हुं
ॐ धौं नेत्रत्रयाय वौषट्
ॐ धः अस्त्राय फट्

इसके बाद कर न्यास करे।

कर न्यास

ॐ धां अंगुष्ठाभ्यां नमः
ॐ धीं तर्जनी भ्यां स्वाहा
ॐ धूं मध्यमाभ्यां वषट्

ॐ धें अनामिकाभ्यां हुं
ॐ धौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्
ॐ धः करतल कर पृष्ठाभ्यां फट्

इसके बाद दोनों हाथ जोड़ कर ध्यान करें।

ध्यान

विवर्णा चंचला कृष्णा दीर्घा च मलिनाम्बरा ।।
विमुक्तकुन्तला रूक्षा विधवा विरलद्विजा
काकध्वजरथारूढा विलम्बितपयोधरा ।।
शूर्पहस्तातिरूक्षाक्षा, धूतहस्ता वरान्विता ।।२।।
प्रवृद्धघोणा तु भृशंकुटिला कुटिलेक्षणा ।।
क्षुत्पिपासार्दिता नित्यम्भयदा कलहास्पदा ।।३।।

साधक को दिन को तो इतना ही प्रयोग करना है, उसके बाद साधक खड़े हो कर उपरोक्त ध्यान का इक्यावन बार उच्चारण करे, और फिर दीपक को लगा रहने दे और स्वयं आसन से उठ जाय।

फिर रात्रि को इसका मुहूर्त १२ बज कर ३५ मिनट से २ बज कर ४१ मिनट तक है, इस बीच साधक लाल धोती पहिन कर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर सामने जलते हुए दीपक की लौ पर आंखों को एकाग्र करता हुआ धूमावती माला से निम्न मन्त्र का जप करे, इसमें जप की संख्या निर्धारित नहीं है, इस अवधि में लगातार जितना जप हो जाय उतना बराबर करता रहे।

धूमावती का गोपनीय मंत्र

धूं धूं धूमावती ठः ठः

इस मंत्र का बराबर जप करे, जब दो बज कर ४१ मिनट हो जाय तो साधक को दीपक की लौ में निश्चय ही धूमावती के दर्शन स्पष्ट हो सकेंगे। उस समय साधक हाथ जोड़ कर कहे, कि आप सिद्ध हों, और भूत, प्रेत आदि मेरे नियंत्रण में रहे, ऐसा कह कर उन्हें भक्ति भाव से प्रणाम करे, वह माला गले में धारण कर ले और यंत्र को सुरक्षित स्थान पर रख दें।

इस प्रकार यह साधना संपन्न होती है और धूमावती सिद्ध हो जाती है। इसके बाद साधक धूमावती यन्त्र के सामने धूमावती माला पहिन कर मात्र इक्यावन बार धूमावती मंत्र का उच्चारण करे तो प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष धूमावती आंखों के सामने साकार उपस्थित हो जाती है, और उससे जो भी निवेदन किया जाता है वह तुरन्त और निश्चय ही पूर्ण होता है।

वास्तव में ही यह साधना अपने आप में दुर्लभ, महत्वपूर्ण और गोपनीय है जिसे मैंने पत्रिका पाठकों के लिए स्पष्ट किया हैं, मुझे विश्वास है कि इस घोर कलियुग में भी इस विशेष दिन पर इस विशेष साधना को संपन्न कर साधक सिद्धि प्राप्त कर आलोचक लोगो को विश्वास दिला सकेंगे कि आज के युग में भी साधना में सिद्धि संभव है, और इस साधना के द्वारा साधक स्वयं सभी दृष्टियों से सम्पन्न, सुखी और सफल हो सकेगा।

एक प्रयोगः गोरखनाथ पद्धति से

किसी भी अमावस्या की आधी रात को साधक काली धोती पहिन कर दोनों पैरों के नीचे एक-एक काले मनको की हकीक माला (प्रत्येक माला की न्यौछावर ६०/रू.) रख कर खड़े हो कर तीन घण्टे निम्न मन्त्र का जप करें, तो निश्चय ही भूत सिद्ध हो जाता है, और वह जीवन भर आज्ञा पालक बना रहता है।

ह्रीं क्रीं भूताय वश्यं फट् ।।

यह अनुभूत और खरा प्रयोग है।

अप्सरा दिवस (७.६.८६) के अवसर पर

सौन्दर्यातिमका शशिदेव्य

अप्सरा

साधना प्रयोग

सौन्दर्यात्मिका अप्सरा साधना मानव जीवन की एक श्रेष्ठ और अद्वितीय साधना है। जीवन में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष-:-ये चार पुरुषार्थ हमारे शास्त्रों में बताये है। इनमें से अर्थ और काम की पूर्णता अप्सरा साधना के

माध्यम से ही संभव है और अप्सरा साधना के द्वारा जब अर्थ प्राप्ति पूर्णता के साथ सम्पन्न होती है, तो उसके द्वारा धर्म भावना संपन्न होती है और उसके द्वारा व्यक्ति मोक्ष प्राप्ति कर जीवन को पूर्णता प्रदान कर देता हैं।

यह अप्सरा है क्या ?

भारतीय शास्त्रों में सौन्दर्य को जीवन का उल्लास और उत्साह माना है, यदि जीवन में सौन्दर्य नहीं है, तो वह जीवन नीरस और उदास हो जाता है, हम में से अधिकांश व्यक्ति ऐसा ही जीवन जी रहे है, हमारे होठों पर से मुस्कराहट खतम हो गई है, चेहरे की मांस पेशियां सख्त और निर्जीव सी हो गई है जिसके फलस्वरूप हम प्रयत्न करके भी खिलखिला नहीं सकते, उन्मुक्त रूप से हंस नहीं सकते, मुस्करा नहीं सकते, एक प्रकार से हमारा जीवन बंधा हुआ सा बन गया है और एक जगह बंधे हुए पानी में सड़ान्ध पैदा हो जाती है, इसी प्रकार रुका हुआ जीवन निराश और बेजान हो जाता है।

इसका कारण हम सौन्दर्य की परिभाषा भूल गये है सौन्दर्य साधना हमारे जीवन में रही ही नहीं है, हम धन के पीछे भागते हुए एक प्रकार से अर्थ लोभी बन गये है, जिसकी वजह से जीवन की अन्य वृत्तियां लुप्त सी हो गई है।

इसके विपरीत यदि हम अपने शास्त्रों को टटोल कर देखे तो देवताओं ने और हमारे पूर्वज ऋषियों ने प्रमुखता के साथ सौन्दर्य साधनाएं संपन्न की है, सौन्दर्य को जीवन में प्रमुख स्थान दिया है, देवताओं की सभा-:-इन्द्र की सभा में नित्य अप्सराएं नृत्य करती थी। वशिष्ठ आश्रम में स्थायी रूप से अप्सराओं का निवास था। विश्वामित्र ने अप्सरा साधना के माध्यम से जीवन को पूर्णता प्रदान की थी, यही नहीं अपितु सन्यासी शंकराचार्य ने भी सौन्दर्या-रिमका शशिदेव्य अप्सरा साधना सम्पन्न करने के बाद अपने शिष्यों को संबोधित करते हुए कहा था कि इस साधना के माध्यम से साधक को यह विश्वास हो जाता है कि

और यह इच्छा साधक के विवेक पर निर्भर है, यह आवश्यक नहीं है, कि अप्सरा केवल भोग्या के रूप में ही होती है, मधुर वार्तालाप, सही मार्गदर्शन भविष्य का पथ प्रदर्शन, निरन्तर धन प्रदान करने की क्रिया भी अप्सरा के माध्यम से ही संभव है, इसीलिए यह अप्सरा साधना साधकों के लिए, युवकों के लिए और वृद्धों के लिए भी समान रूप से उपयोगी है।

उसका अपने मन पर, और अपनी इन्द्रियों पर पूर्णतः नियंत्रण है, इसके माध्यम से जीवन की वे प्रमुख वृत्तियां जो जीवन में आनन्द और हास्य का निर्माण करती है, वे वृत्तियां उजागर होती है, और मनुष्य दीर्घायु प्राप्त करने में सफल हो पाता है। इस साधना के माध्यम से व्यक्ति के जीवन में अर्थ सुख, आनन्द और तृप्ति की किसी भी प्रकार से कोई न्यूनता नहीं रहती।

जीवन में नारी शरीर के माध्यम से ही सौन्दर्य की परिभाषा अंकित की है। यो तो शास्त्रों में १०८ अप्स-राओं का विवरण वर्णन मिलता है, और इन सभी की साधनाओं के बारे में विस्तार से वर्णन है। अप्सरा, सौन्दर्य का साकार जीता जागता प्रमाण है। यदि यह प्रश्न पूछा जाय कि सौन्दर्य क्या है, तो उसे हम किसी अप्सरा के माध्यम से ही स्पष्ट अंकन कर सकते है। अप्सरा का तात्पर्य एक ऐसी देवत्वपूर्ण सौन्दर्ययुक्त सोलह वर्षीय नारी प्रतिमा है, जो मंत्रों के माध्यम से पूर्णतः आधीन होकर साधक के दुःख में भी सुख की बिजली चमकाने में समर्थ होती है, उसके तनाव के क्षणों में आनन्द प्रदान करने की सामर्थ्य रखती हैं। वह नित्य स शरीर साधक के साथ दृश्य और अदृश्य रूप में बनी रहती है और प्रियतमा के रूप मे उसकी प्रत्येक प्रकार की इच्छा पूर्ण करती रहती है।

प्रिय का तात्पर्य प्रदान करना होता है, जो लेने की इच्छा नहीं रखता, जिसमें केवल सामने वाले को सुख और आनन्द देने की ही भावना होती है, और अप्सरा अपने विचारों से अपने कार्यों से अपने व्यवहार से और अपने साहचर्य से साधक को वह सब कुछ प्रदान करती है, जो उसकी इच्छा होती है।

और यह इच्छा साधक के विवेक पर निर्भर है, यह आवश्यक नहीं है, कि अप्सरा केवल भोग्या के रूप में ही होती है, मधुर वार्तालाप, सही मार्गदर्शन भविष्य का पथ प्रदर्शन, निरन्तर धन प्रदान करने की क्रिया भी अप्सरा के माध्यम से ही संभव है, इसीलिए यह अप्सरा साधना साधकों के लिए, युवकों के लिए और वृद्धों के लिए भी समान रूप से उपयोगी है, यही नहीं अपितु स्त्रियों के लिए भी अप्सरा साधना का विशेष महत्व बताया है, जिससे कि उन्हें एक अभिन्न सखी मिल सके उसके जीवन में आनन्द और उत्साह प्रदान कर सके।
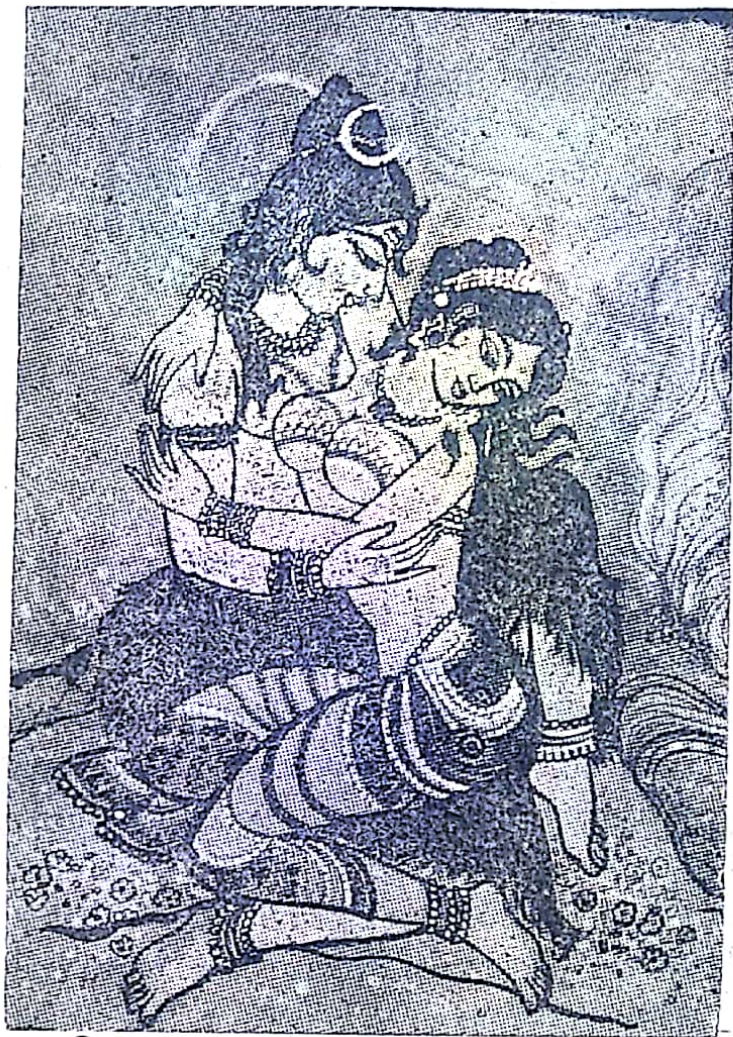
कुल मिला कर अप्सरा सौन्दर्य की साकार प्रतिमा होती है। एक ऐसा सौन्दर्य युक्त शरीर, एक ऐसा महकता हुआ, फूलों की डाली की तरह लचकता हुआ कमनीय नारी शरीर, जो साधक को सभी दृष्टियों से पूर्णता प्रदान करने में सुख और आनन्द देने में समर्थ है. यदि देवताओं ने, हमारे पूर्वजों ने ऋषियों ने और सन्यासियों ने अप्सरा साधना को उचित और जीवन में आवश्यक बताया है, तो मेरी राय में यह साधना जीवन का आवश्यक तत्व होना चाहिए।

क्या वर्तमान में भी अप्सरा का प्रत्यक्ष दिखाई देना संभव है ?

और मैं कहता हूँ कि निश्चित और निःसंदेह उसके प्रत्यक्ष दर्शन और उसका साहचर्य संभव है। जिस प्रकार से हम किसी अन्य पुरुष को, पेड़ को या मकान को देख सकते है, उसी प्रकार से अप्सरा को प्रत्यक्षतः देख सकते है, स्पर्श कर सकते है, और उसके साथ साहचर्य संभव है। क्या हवा को हम देख सकते हैं. सही परिभाषा कहें तो हवा को देखना संभव नहीं है अपितु उसका अनुभव होता है, और हम यह दावे के साथ कह सकते है कि हवा होती है, जिससे हमारा जीवन गतिशील बना रहता है। ठीक इसी प्रकार अप्सरा अदृश्य रूप में भी अनुभव होती रहती है, और जीवन को गति एवं आनन्द प्रदान करती रहती है, और प्रत्यक्ष रूप में भी प्राप्त होती है, और उसके द्वारा निरन्तर धन, द्रव्य, वस्त्र, आभूषण प्राप्त होते रहते है।

मैंने अपने जीवन में कई साधनाएं संपन्न की हैं, जब तक हम साधना क्षेत्र में उतरते नहीं, तब तक उसका

अहसास भी नहीं होता, और जब हम साधना क्षेत्र में प्रवेश करते है, अपने मन को एकाग्र करते है, अपने मन को एकाग्र कर साधना क्षेत्र में आगे बढते है तो विविध प्रकार के अनुभव होते रहते है, विविध प्रकार के दृश्य और बिम्ब दिखाई देते रहते है। और जब हमें साधना में सफलता मिल जाती है तो हमारा जीवन ही बदल जाता है, हम में आत्म विश्वास आ जाता है, एक निश्चितता प्राप्त हो जाती है कि हम वर्तमान युग में भी साधना कर सकते है, और उसमें पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकते है।

यों अप्सरा से संबंधित जितनी भी साधनाएं है, उनमें शशिदेव्य अप्सरा साधना अपने आप में सर्वश्रेष्ठ और अद्वितीय मानी गई है, क्योंकि शशिदेव्य अप्सरा अत्यन्त दयालु स्वभाव की है और शीघ्र ही सिद्ध होकर प्रत्यक्ष उपस्थित हो जाती है इस साधना को सिद्ध करने के बाद शशिदेव्य अप्सरा जीवन भर साधक के नियंत्रण में रहती है और साधक जो भी आज्ञा देता है, उसका मनोयोग पूर्वक पालन करती है। शशिदेव्य अप्सरा साधक को प्रेमी के रूप में ही अनुभव करती है. और निरन्तर उसे वस्त्र, धन, आभूषण और सुख प्रदान करती रहती है। उसकी निर्धनता को हमेशा हमेशा के लिए समाप्त कर देती है, और उसे अपने जीवन में संपन्न और ऐश्वर्य-वान बना देती है। शशिदेव्य अप्सरा अत्यधिक सुन्दर, तेजस्वी और सौन्दर्य की साकार प्रतिमा है, अत्यन्त नाजुक, कमनीय और षोडस वर्षीय युवती के रूप में साधक के सामने सज-धज कर बराबर बनी रहती है और साधक चाहे तो दृश्य रूप में और वह चाहे तो अदृश्य रूप में उसके सामने रहती है, और उसका कार्य करके प्रस-न्नता अनुभव करती है।

आज के युग में मेरी इन पंक्तियों को पढ़ कर सामान्य व्यक्ति विश्वास नहीं करेगा, जिनको बुद्धि का अजीर्ण है. जो संसार में अपने आपको ही बुद्धिमान समझ बैठे है उनको तो भगवान भी नहीं समझा सकता, जो पग-पग पर आलोचना करने में ही अपनी शान समझते है, उनको साधना के बारे में कुछ बताना बेकार है। भर्तृहरी ने एक स्थान पर कहा है कि उल्लू दिन को अपनी आंखें बन्द किये रहता है, और उसको यदि पूछा जाय तो वह दृढता के साथ यही कहता है, कि आकाश में सूर्य उगता ही नहीं, या सूर्य जैसा कोई देवता है ही नहीं और सूर्य से किसी प्रकार का प्रकाश या रोशनी नहीं होती, तो इसमें सूर्य का क्या दोष? ठीक इसी प्रकार आज के वाता-वरण में सांस लेने वाले साधक भी इसी प्रकार से यदि अविश्वास की दीवार पर खडे हो कर कहे कि साधना होती ही नहीं या अप्सरा के प्रत्यक्ष दर्शन संभव नहीं, तो इसमें तपस्वियों, शास्त्रो और गुरू का क्या दोष?

अप्सरा साधना प्रयोग

अप्सरा साधना संभव है, और इसे कोई भी साधक मनोयोग पूर्वक सम्पन्न कर सकता है। जब मुझे इस साधना से लाभ हुआ है, जब मैंने इस साधना के माध्यम से सफलता पाई है तो आप भी सफलता पा सकते है। और यह साधना कठिन नहीं है, आवश्यकता इस बात की है, कि आपमें विश्वास हो, धैर्य हो, अपने मार्गदर्शक या गुरू के प्रति आस्था हो और हमारे शास्त्रों के प्रति विश्वास हो, क्योंकि विश्वास के द्वारा ही जीवन में सब कुछ संभव है। जो प्रयत्न करता है, वह सफल हो जाता है।

किसी भी युद्ध को बिना अस्त्र शस्त्र के नहीं जीता जा सकता ठीक इसी प्रकार साधना में भी यंत्रों की आवश्यकता होती है. और उसके द्वारा ही साधना के युद्ध को जीता जा सकता है, और सफलता प्राप्त की जा सकती है।

पत्रिका में प्रत्येक साधना के साथ सामग्री का विवरण और उसकी न्यौछावर अंकित होती है, इसके पीछे कोई स्वार्थवृत्ति नहीं है. इसके दो मूल कारण है, एक तो यह कि यदि केवल साधना ही लिख दी जाय और साधना सामग्री के बारे में विवरण नहीं हो तो साधक दिग्भ्रमित हो जाता है, उसे समझ में नहीं आता किस प्रकार से साधना सम्पन्न की जाय, और दूसरे जहां साधना सामग्री का विवरण होता है, वहां उसकी न्यूनतम न्यौछावर भी इसलिए अंकित कर दी जाती है कि साधक को व्यर्थ का पत्राचार न करना पड़े, इससे काफी समय व्यर्थ में ही बरबाद हो जाता है।

पत्रिका, श्रेष्ठ पंडितों के द्वारा प्रत्येक यंत्र को मंत्र सिद्ध, प्राण प्रतिष्ठा युक्त करके भेजने की व्यवस्था करती है और यह भी प्रयत्न करती है कि कम से कम व्यय आवे फिर भी आज के युग में पंडितों की दक्षिणा और पूजन सामग्री आदि के भाव इस कदर बढ़ गये है, कि उस पर अधिक व्यय आ ही जाता है। फिर भी हमारा यह

प्रयत्न होता है कि साधकों को प्रामाणिक सामग्री एक स्थान पर मिल सके और वे साधना सम्पन्न कर इसका लाभ उठा सके।

शशिदेव्य साधना प्रयोग

यह साधना मात्र आठ दिनों की साधना है, किसी भी शुक्रवार से यह साधना प्रारम्भ की जाती है. और अगले शुक्रवार को यह साधना सम्पन्न हो जाती है। इसमें यह

आवश्यक नहीं है कि एक ही स्थान पर बैठ कर साधना सम्पन्न की जाय, यदि आपको इस अवधि में किसी अन्य स्थान पर जाना पडे तो वहां पर बैठ कर के भी रात्रि में इस साधना को सम्पन्न किया जा सकता है, यह रात्रि कालीन साधना है, और इसको रात में ही सम्पन्न करना चाहिए।

इस साधना में किसी विशेष प्रकार के वस्त्र या आसन आदि की आवश्यकता नहीं है, साधक चाहे तो धोती या अन्य किसी भी प्रकार के वस्त्र धारण कर इस साधना को सम्पन्न कर सकता है। साधना काल में अपने कानों में गुलाब का इत्र लगा कर साधना में बैठे तो ज्यादा उचित रहता है।

सामने किसी पात्र में गुलाब की पंखुड़ियां बिछाकर (गुलाब न हो तो अन्य किसी भी प्रकार के पुष्प का उपयोग हो सकता है) उस पर शशिदेव्य अप्सरा यंत्र को स्थापित कर दे। यह यंत्र अत्यन्त ही महत्वपूर्ण माना गया है, और इसे मंत्र सिद्ध तथा तेजस्वी सम्पन्न करने पर व्यय मात्र २४०) रू. आया है। इस यंत्र को गुलाब की पंखुड़ियों पर स्थापित कर उस पर केसर का तिलक करे और फिर अपने दाहिने हाथ पर बांये हाथ से केसर से 'शशिदेव्य अप्सरायै नमः' अक्षर लिखे और फिर दाहिने हाथ से ही हकीक माला के द्वारा मंत्र जप करे। इसमें सफेद रंग के अलावा अन्य रंग की हकीक माला का प्रयोग करना चाहिए।

सबसे पहले अपनी आंखों के सामने अत्यन्त सुन्दर आकर्षक मन मोहक अप्सरा का चिन्तन करे, और फिर निम्न प्रकार से उसका ध्यान और आह्वान करे।

त्रैलोक्य मोहिनी गौरी विचित्राम्बर-धारिणी
विचित्रालङ्कृता रम्या नर्तकी-वेष धारिणीम्।
पूर्ण चन्द्राननां गौरी विचित्राम्बर-धारिणी
पीनोन्नत-कुचा-रामां सर्वज्ञामभय-प्रदाम्।
कुरंग नेत्रां शरविन्दु-वक्त्रां बिम्बाधरां चन्दन-
गन्ध-माल्याम्।
चीनांशुकां पान-कुचां मनोज्ञा दिव्या सदा काम-
करां विचित्राम्।

ध्यान के बाद निम्न मंत्र की ५१ माला मंत्र जप करे

मंत्र

ॐ ह्रीं आगच्छागच्छ शशिदेव्य अप्सरायै नमः

५१ माला मन्त्र जप होने के बाद साधक विश्राम करे. इस प्रकार नित्य करे, पर अपने साधना के रहस्य किसी को न बतावे, यदि इन आठ दिनों में कुछ दृश्य दिखाई भी दे तब भी किसी को न कहे।

अगले आठवे दिन शुक्रवार की रात्रि को अत्यन्त सुन्दर आकर्षक मनमोहक शशिदेव्य अप्सरा साधक के सामने सशरीर उपस्थित होती है, और वह साधक के पास ही घुटने से घुटना सटा कर बैठ जाती है, और लज्जा के साथ कहती है कि मैं तुम्हारी साधना के द्वारा तुम्हारे वश में हूं, और जीवन पर्यन्त तुम्हारे वश में रहूंगी, जब वह हाथ पर हाथ दे कर वचन दे, तब साधक अपने आसन से उठ खड़ा हो और वह सामने पात्र रखा हुआ शशिदेव्य अप्सरा यन्त्र अपने गले में या शरीर पर धारण कर ले, इस प्रकार जब तक वह यन्त्र साधक के शरीर पर रहेगा, तब तक शशिदेव्य अप्सरा साधक के वश में बनी रहेगी।

और जब भी उस यन्त्र को स्पर्श कर पीछे दिये हुए मन्त्र का ११ बार उच्चारण किया जायेगा तब वह प्रत्यक्ष प्रगट होगी और उसे जो भी कार्य सौंपा जायेगा वह अवश्य ही पूर्ण करेगी।

यों तो यह साधना कभी भी की जाती है, पर ७ जून ८९ को शशिदेव्य अप्सरा दिवस है, और इस दिन पुष्य नक्षत्र भी है, अतः इस दिन साधना प्रारम्भ की जाय तो निश्चय ही सफलता मिल सकती है, वास्तव में ही प्रत्येक साधक को इस दिन का उपयोग करना चाहिए।

बटुक भैरव जयन्ती के अवसर पर

बटुक भैरव प्रयोग

ज्येष्ठ शुक्ल दसमी अर्थात १३-६-८९ को 'बटुक भैरव जयन्ती' है यह गृहस्थ व्यक्तियों के लिए सर्वाधिक उपयुक्त अवसर है, क्योंकि भैरव, गृहस्थ जीवन की पूर्णता देने में श्रेष्ठतम शक्ति हैं, इस साधना से तीन महत्वपूर्ण उपलब्धियां प्राप्त होती है।

१– मानसिक तनाव से मुक्ति
२– अटूट परिवार की सफलता
३– अपनी छिपी हुई शक्तियों को पहिचानने की क्षमता

और इन तीनों ही जीवन की श्रेष्ठ उपलब्धियों को प्राप्त करने का सर्वोत्तम प्रयोग है, "बटुक भैरव जयन्ती प्रयोग"।

पूरे संसार में ९० प्रतिशत हृदय रोगों, का कारण मानसिक तनाव है, संसार में ९८ प्रतिशत आत्महत्याओं का कारण मानसिक तनाव और मानसिक दबाव है। तथा अल्सर, हृदय रोग, पेट से सबंधित बीमारियां, अनिद्रा आदि घातक और भयंकर रोगों का कारण भी मानसिक तनाव ही है।

पर दुर्भाग्य से रोगों की श्रेणी में हमने मानसिक

तनाव को सबसे कम महत्व दिया है। हम यह भूल कर बैठे है, कि मानसिक तनाव कोई रोग है ही नहीं, या मानसिक तनावों से किसी प्रकार की हानि नहीं हो सकती जब कि पूरे विश्व के चिकित्सकों और विशेषज्ञों की राय यह है कि जीवन की प्रसन्नता, जीवन की हंसी, माधुर्य, और स्वास्थ्य को चौपट करने का एक मात्र कारण मानसिक तनाव है, यह यमराज की सगी बहिन है, जिसे अपना लेने से, व्यक्ति शीघ्र ही अल्प समय में मृत्यु को प्राप्त हो जाता है।

क्यों होता है मानसिक तनाव

मुझे कई परिवारों से निरन्तर मिलने और उनकी पारिवारिक समस्याओं को जानने का अवसर मिलता रहता है, मेरी राय में मानसिक तनाव होने का कारण वे कार्य है, जिसे हम चाह कर के भी अपने ढंग से पूरा नहीं कर पाते। उदाहरण के लिए यदि हम चाह कर भी पत्नी के विचारों को अपने अनुकूल नहीं बना सकते, तो परस्पर मतभेद से तनाव बढ़ना स्वाभाविक है, यदि हम परिश्रम और प्रयत्न करने के बावजूद भी अपनी आर्थिक उन्नति नहीं कर पाते तो मानसिक तनाव बढ़ जाता है, इसके अलावा इसके अन्तर्गत वे छोटे-छोटे सैकड़ों कार्य है, जो हम भली प्रकार से समय पर सम्पन्न नहीं कर पाते, हमारी सारी मेहनत व्यर्थ हो जाती है। हमारी सारी बुद्धि, सारा कौशल और सारा चातुर्य व्यर्थ हो जाता है, और इस प्रकार से हम मन ही मन कुढ़ते रहते है, घुन की तरह यह मानसिक तनाव हमारे जीवन को खोखला करता रहता है और हम एक के बाद एक नित्य नयी बीमारियो से ग्रस्त होते रहते हैं।

प्रत्येक व्यक्ति के अलग अलग कारणों से मानसिक तनाव होते हैं, कोई व्यक्ति परीक्षा में असफल होने के बावजूद भी, मानसिक तनाव से ग्रस्त नहीं होता, और दुगने उत्साह से प्रयत्न कर परीक्षा में सफलता प्राप्त कर लेता है, पर वही व्यक्ति प्रेमिका की बेवफाई से निराश हो कर टूट जाता है, और जीवन में असफल हो जाता है। कोई

इस साधना को सम्पन्न करने पर जहां एक तरफ आप सभी प्रकार के मानसिक तनावों से मुक्त हो सकेगे, आपके जीवन में प्रफुल्लता, आनन्द और उमंग का स्रोत प्रवहित हो सकेगा, आप जीवन का असली आनन्द ले सकेगे, अपने घर को व्यवस्थित कर सकेगे, टूटते हुए परिवार को बचा सकेगे, बिगड़ते हुए और परस्पर लड़ते हुए बेटों में मधुरता स्थापित कर सकेगे, और साथ ही साथ अपनी छिपी हुई शक्तियों को जान सकेगे, उसका विकास कर सकेगे, और उसमें पूर्णता एवं सफलता प्राप्त कर सकेगे, और यह सब बटुक भैरव साधना के द्वारा ही संभव है।

व्यक्ति अपने परिवार की समस्याओं को पूरे जोश के साथ जूझ कर सामना कर लेता है, पर समाज की बदनामी से वह पूरी तरह से टूट जाता है और मानसिक तनाव से ग्रस्त हो जाता है कुछ लोग मानसिक तनाव को हल्के फुल्के ढंग से लेते है, और जीवन में आगे बढ़ जाते है पर कुछ लोग अत्यधिक संवेदनशील होते है, उनको छोटी सी बात भी बहुत अधिक मानसिक दबाव दे देती है और ऐसे व्यक्ति बाहर भले ही कुछ भी न कहे, अन्दर ही अन्दर कुढ़ते रहते है।

क्या कुछ उपाय है इसका

मैंने इस विषय में और इससे संबंधित सैकड़ों पुस्तकें पढ़ी है, डाक्टरों और चिकित्सकों से मिला हूं और सबका एक ही उत्तर है. मानसिक तनाव को समाप्त करने से संबंधित कोई औषधि नहीं है। जब व्यक्ति मेन्टल टेन्शन या मानसिक तनाव से ग्रस्त होता है, तो डाक्टर उसे

॥ राज राजेश्वरी यन्त्र ॥
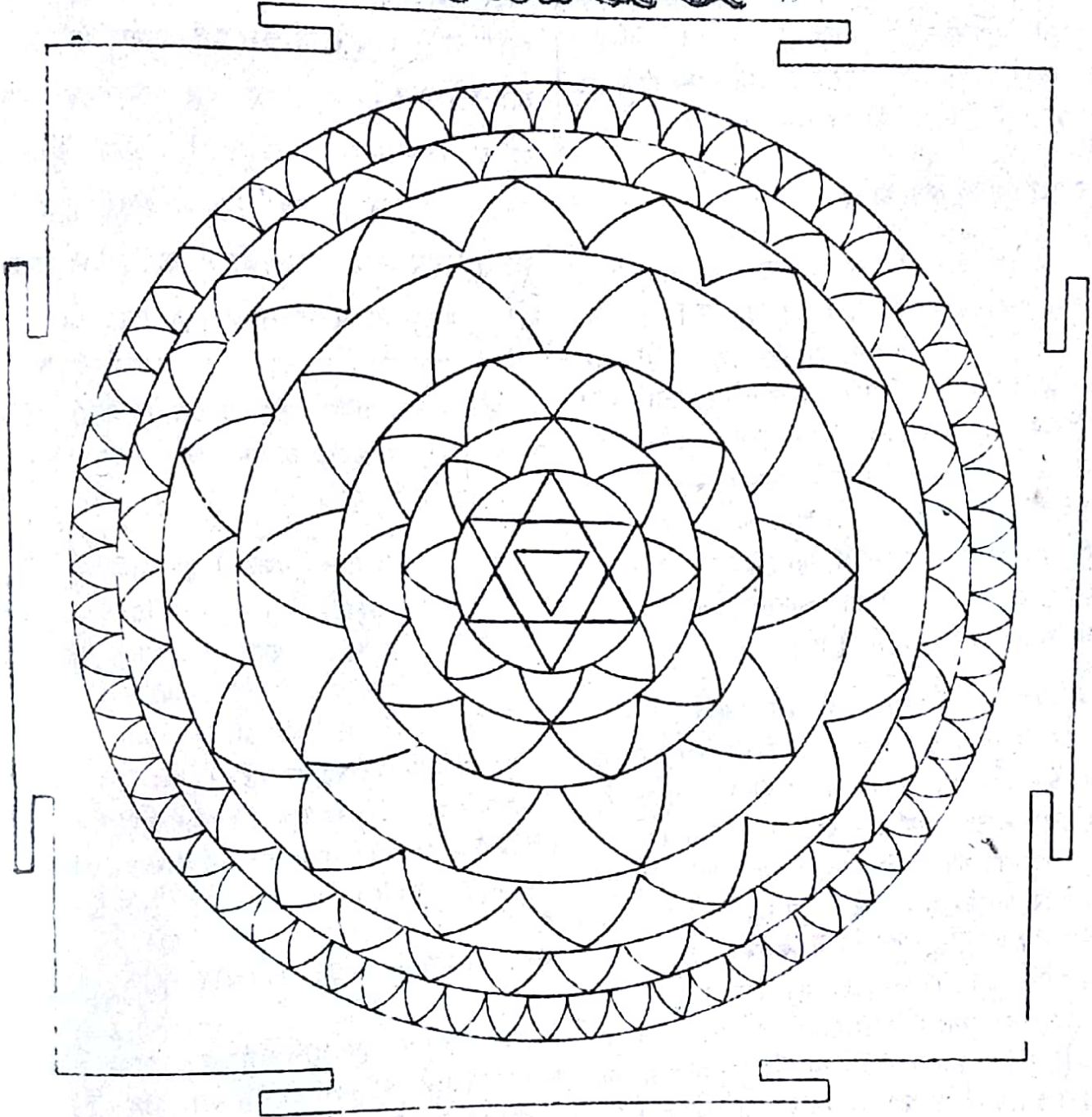
(जो बटुक साधना का आधार है)

नींद की गोली दे देते है, और उसके फलस्वरूप कुछ समय के लिए उसे नींद अवश्य आ जाती है, परन्तु उससे मानसिक तनाव से छुटकारा नहीं मिलता और यह रोग व्यक्ति के शरीर में उसकी नस-नाड़ियों में घुस कर उसके शरीर को खोखला बना देता है, असमय में ही उसकी आंखें धंस जाती है, गाल पिचक जाते है, सिर के बाल सफेद होने लग जाते है, उसके जीवन से हंसी और मुस्कराहट लुप्त हो जाती है, और एक प्रकार से वह अपने

जीवन को बोझ की तरह ढोता हुआ जीवित रहता है।

पर जो उपाय, जो औषधि, जो युक्ति संसार के चिकित्सकों के पास नहीं है वह उपाय और औषधि साधना ग्रन्थों में है, और इसका एक मात्र प्रामाणिक हल और उपाय है — बटुक भैरव साधना ।

अटूट परिवार का अंग

क्या आधुनिक सभ्यता में भी अटूट परिवार जैसा कोई शब्द अस्तित्व में रहा है, दो या तीन पीढ़ियों का साथ रहना, अब एक स्वप्न सा बन गया है या दो या तीन भाई और उसका परिवार एक साथ रहे, ऐसा वर्तमान युग में संभव नहीं दिखाई देता, इसका कारण हम चाहे-अनचाहे टूटते हुए परिवार में विश्वास करने लगे है, हमारे सोचने का दायरा बहुत छोटा सा हो गया है, हमारी बुद्धि एक सीमित घेरे में आबद्ध हो कर रह गई है, और सामूहिक परिवार का जो आनन्द होता है, उस आनन्द से हम वंचित हो गये है।

मैं जानता हूं कि आज की इस मंहगाई में बहुत बड़ा परिवार बोझ सा बन जाता है, परन्तु परिवार का परस्पर प्रेम और संबंध बोझ नहीं होता, हम चाहे अलग अलग रहे यदि हम तीन भाई हो, और तीनों परिवार अलग अलग मकानों में रहे, अलग अलग भोजन बनाये और कमाये, इसमें कोई दोष नहीं है, पर इसके बावजूद भी हम तीनों परिवारों में मधुरता हो, परस्पर आत्मीय संबंध हो, घनिष्ठता हो, एक दूसरे के सुख दुख में भागीदार हो, ऐसा नहीं हो पाता, हम परस्पर लड़ाई झगड़ों में, मन मुटावों में और मीम मेख निकालने में लगे रहते है। हम अपने ही घेरे में कैद हो जाते है। न तो हम दूसरे के सुख दुख की चिन्ता करते हैं, न परस्पर मधुरता ही व्याप्त रहती है, यदि मिलते भी है, तो औपचारिक ढंग से, मुस्कराते भी है तो कृत्रिम ढंग से और यह हमारे जीवन की न्यूनता है। इससे और हानि भले ही हो या न हो, हमारा परस्पर विश्वास टूट जाता है, हमारी परस्पर आत्मियता खत्म हो जाती है और इस

मेरे जीवन की सफलता प्रसिद्धि और सम्मान का एक मात्र कारण बटुक भैरव साधना है। मेरे जीवन की उमंग मेरे जीवन का जोश और उत्साह का कारण बटुक भैरव साधना है, और मैं भले ही अन्य साधनाएं सम्पन्न करूं या न करूं इस दिन का तो उपयोग करताही हूं, और इस साधना को पूर्णता के साथ सम्पन्न करता ही हूं।

प्रकार से सम्पूर्ण परिवार का जो आनन्द होता हैं, वह हम प्राप्त नहीं कर पाते, यह एक बहुत बड़ा आनन्द है जिससे हम वंचित हो जाते है।

क्या हम कल्पना कर सकते है, कि दादी मां बैठी हुई हो, और पोते पोतियों को गोद में बैठा कर कहानी सुना रही हो, बहू परिवार के ज्येष्ठ सदस्यों को मधुरता और आनन्द के साथ भोजन करा रही हो, और छोटे बडे एक साथ आनन्द के साथ बातचीत में मग्न भोजन कर रहे हो, क्या ऐसा दृश्य देखने को मिल सकता है, मेरी राय में लगभग नहीं के बराबर है, और यह अपने आप मे एक अद्वितीय आनन्द है, जिसे हम प्राप्त नहीं कर पाते।

क्या रहस्य है अटूट परिवार का

और यहां पर यही प्रश्न उभर कर सामने आता है, कि हम टूटते हुए परिवार को कैसे बचा सकते है, किन युक्तियों से हम परिवार को परस्पर आबद्ध कर सकते है, कौन से तरीकों से टूटता हुआ परिवार रुक सकता है, या भाइयों में परस्पर प्रेम स्नेह और अपनत्व बना रह सकता है, वह कौनसी औषधि है, जिसके द्वारा एक स्वस्थ और आदर्श परिवार एक ही स्थान पर बना रह सकता है, परस्पर अद्वितीय प्रेम संबंध, माधुर्य सुख और एक दूसरे का हित चिन्तन संभव हो सकता है।

और इसका उत्तर है, इसका उपाय है, इसकी प्रामाणिक औषधि है, और इसका पूर्ण सफलतादायक प्रयोग है — बटुक भैरव साधना।

अपनी छिपी हुई शक्तियों का उपयोग

हकीकत में देखा जाय तो हमें आस पड़ौस का, मौहल्ले का और पूरी दुनिया का तो ज्ञान है, पर हमें अपने आपका ही ज्ञान नहीं है हमें यही पता नहीं है, कि भगवान ने हमें किस वजह से जन्म दिया है। क्या जीवन भर क्लर्की करने के लिए ही हमारा निर्माण हुआ है, क्या जीवन भर दुकान पर बैठ कर झूठ कपट करने के लिए ही हमारे व्यक्तित्व का निर्माण हुआ है, क्या जीवन भर मजदूरी करते रहने को ही हम जीवन कह सकते है, अफसरों की डांट खाना, छोटे मोटे कार्य कर बड़ी मुश्किल से जीविकोपार्जन करना ही हमारी नियती है।

नहीं, आप यह सब इसलिए कर रहे है, कि आपको अपने स्वयं के बारे में ज्ञान नहीं है, आपको इस बात का पता नहीं है, कि आपका निर्माण क्यों हुआ है, आप में कौन कौन सी अलौकिक शक्तियां छिपी हुई है, जिसे उभार कर आप प्रसिद्धि और सम्मान के उच्च शिखर पर पहुंच सकते है। आप कल्पना करें, कि यदि सुनील गावस्कर को दुकान पर बिठा दिया जाता, तो क्या वह पूरे भारत में प्रसिद्ध हो पाता, क्या बिड़ला जी को क्रिकेट सीखने के लिए प्रेरित करते और बचपन से ही क्रिकेट की ओर उनका अभ्यास कराया जाता तो क्या वे पूर्णतः सफल हो पाते। इन सभी प्रश्नों का उत्तर 'ना' है, इसका कारण यह है, कि व्यक्ति अपने किसी विशेष क्षेत्र में ही पूर्णता प्राप्त कर सकता है और आज के युग में कोई भी क्षेत्र सफलता और समृद्धि देने में समर्थ है, एक व्यक्ति केवल दौड़ कर भी पूरी दुनियां में नाम कमा सकता है, धन और यश का अम्बार लगा सकता है, इसी प्रकार मुक्केबाजी में, राजनीति में, व्यापार में और साइकल के करतब दिखा कर के भी पूरे देश में प्रसिद्धि और सम्मान प्राप्त कर सकता है, क्योंकि आज का युग स्पेसियललाइजेशन का है। विशिष्टता का है, किसी एक छोटे से छोटे क्षेत्र में भी यदि व्यक्ति अद्वितीय है तो वह रातों रात प्रसिद्धि और सम्मान प्राप्त कर सकता है।

और यह सब संभव होता है, जब आपको इस बात का ज्ञान हो, कि आप के लिए कौन सा क्षेत्र सर्वाधिक उपयुक्त है, आप किस क्षेत्र में सफलता पा सकते है, प्रभु ने आप में कौन कौन से अलौकिक गुण दिये है, और इसे जानने के लिए दुनियां में कोई यंत्र नहीं बना है, इसे जानने का विश्व में कोई उपाय या युक्ति नहीं है, इसके बारे में तो पूरी जानकारी प्राप्त करने का एक मात्र साधन है — बटुक भैरव साधना।

बटुक भैरव साधना

अब परम्परा ढंग से बटुक भैरव साधना करने की आवश्यकता नहीं है, अब भैरव पर सिन्दूर लगाने से उसकी पूजा करने से या उसके सामने तेल का दीपक लगाने से सफलता नहीं मिल सकती। अब आवश्यकता है पूर्णता के साथ शास्त्र सम्मत बटुक भैरव साधना या प्रयोग करने की; और यह दिन १३-६-८९ बटुक भैरव दिवस ही है जो कि पूरे वर्ष में, एक बार आता है, और यह केवल एक दिन की साधना है, इस साधना को सम्पन्न करने पर जहां एक तरफ आप सभी प्रकार के मानसिक तनावों से मुक्त हो सकेंगे, आपके जीवन में प्रफुल्लता, आनन्द और उमंग का स्रोत प्रवहित हो सकेगा, आप जीवन का असली आनन्द ले सकेंगे, अपने घर को व्यवस्थित कर सकेंगे, टूटते हुए परिवार को बचा सकेंगे, बिगड़ते हुए और परस्पर लड़ते हुए बेटों में मधुरता स्थापित कर सकेंगे, और साथ ही साथ अपनी छिपी हुई शक्तियों को जान सकेंगे, उसका विकास कर सकेंगे, और उसमें पूर्णता एवं सफलता प्राप्त कर सकेंगे, और यह सब बटुक भैरव साधना के द्वारा ही संभव है।

मेरे जीवन की सफलता प्रसिद्धि और सम्मान का एक मात्र कारण बटुक भैरव साधना है। मेरे जीवन की उमंग मेरे जीवन का जोश और उत्साह का कारण बटुक

भैरव साधना है, और मैं और भले ही अन्य साधनाएं सम्पन्न करूं या न करूं इस दिन का तो उपयोग करता ही हूं, और इस साधना को पूर्णता के साथ सम्पन्न करता ही हूं।

बटुक भैरव प्रयोग

यह रात्रिकालीन साधना है, १३-६-८९ की रात्रि को स्नान कर काले आसन पर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर साधक बैठ जाय और सामने परम श्रेष्ठ बटुक भैरव महायंत्र (न्यौछावर १५०)रू. को स्थापित कर दे, यह यंत्र अत्यन्त पूर्णता के साथ बनाया हुआ होता है और इसके सामने पांच हकीक पत्थर (न्यौछावर ३०)रू. रख दे। पहले बटुक भैरव यंत्र की संक्षिप्त पूजा करें, यंत्र पर सिन्दूर लगावे, अक्षत पुष्प नैवेद्य समर्पित करे, और फिर सामने ग्यारह तेल के दीपक जलावे, तेल के दीपक का मुंह साधक की ओर होना चाहिए, इसमें किसी भी प्रकार के तेल का प्रयोग हो सकता है।

इसके बाद साधक बिना भय, या चिन्ता के विश्वामित्र प्रणीत गोपनीय और दुर्लभ बटुक भैरव मंत्र का जप मूंगे की माला से करे, ज्यादा अच्छा तो यह होगा कि यदि काले दाने की हकीक माला (न्यौछावर ८०)रू.) मिल जाय तो उसी का प्रयोग करे, इस माला से इस रात्रि को निम्न दुर्लभ मंत्र की इक्यावन माला मंत्र जप करे।

बटुक भैरव गोपनीय मंत्र

॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रीं हुं ॐ ॥

मंत्र जप सम्पन्न होने पर वह माला और बटुक भैरव यंत्र को घर में सुरक्षित स्थान पर रख दें। आप स्वयं इस अद्भुत प्रयोग और चमत्कार को देखें, अगले कुछ ही दिनों में आप स्वयं, स्वयं में और परिवार में होते हुए परिवर्तन को अनुभव करे, और आप देखेगे कि आप पहले की अपेक्षा मानसिक तनावों से पूर्णतः मुक्त हो कर अत्यधिक सुखी, सफल, सानन्द, दीर्घजीवी रोग रहित और लोकप्रिय होने के साथ साथ उन्नति की ओर अग्रसर है, और आपके सारे रुके हुए कार्य स्वतः हो होने लग गये है।

शिष्य के सात सूत्र

भगवत्पाद शङ्कराचार्य ने "शिष्य" — कसौटी पर खरे उतरने वाले शिष्य — के सात सूत्र बताये हैं, जो निम्न हैं। आप मनन कर निर्णय करें, कि आपके जीवन में कितने सूत्र संग्रहित हैं।

● अन्तेश्रियै वः

जो आत्मा से प्राणों से हृदय से अपने गुरुदेव से जुड़ा हो, जो गुरु से अलग होने की कल्पना करके ही भाव विह्वल हो जाता हो।

● कर्तव्य श्रियै नः

जो अपनी मर्यादा जानता हो, गुरु के सामने अभद्रता, अशिष्टता का प्रदर्शन न कर पूर्ण विनीत नम्र एवं आदर्श रूप में उपस्थित होता हो।

● सेव्यं सतै दिवौं च

जिसने गुरु सेवा को ही अपने जीवन का आदर्श मान लिया हो, और प्राण प्रण से गुरु की तन-मन-धन से सेवा करना ही जीवन का उद्देश्य रखता हो।

● ज्ञानं मृते वै श्रियं

जो ज्ञान रूपी अमृत का नित्य पान करता रहता है और अपने गुरु से निरन्तर ज्ञान प्राप्त करता ही रहता है।

● हितं वै हृदं

जो साधनाओं को सिद्ध कर लोगों का हित करता हो और विश्व का कल्याण करने की भावना रखता हो।

● गुरुर्वै गतिं

गुरु ही जिसकी गति, मति हो, गुरुदेव जो आज्ञा दें, बिना विचार किये उसका पालन करना ही अपना कर्तव्य समझता हो।

● इष्टो गुरुर्वै गुरू

जिस शिष्य का इष्ट ही गुरु हो, जो अपना सर्वस्व गुरु को ही समझता हो।

सिद्धाश्रम जयन्ती (२७.६.८६) के अवसर पर

देह सिद्धि गुटिका

सिद्धाश्रम दिवस के अवसर पर मैं कुछ ऐसे रसायनों के बारे में अपनी जानकारी प्रस्तुत कर रहा हूँ जो कि अब तक अप्रकाशि रही है। यों तो पत्रिका में समय समय पर रसायन विज्ञान से सबंधित लेख प्रकाशित होते रहे है, और मैंने उन लेखों का अध्ययन भी किया है। मेरे जीवन का बहुत बड़ा भाग रसायन के क्षेत्र में ही व्यतीत हुआ है और सिद्धाश्रम में इस क्षेत्र में मेरा जो नाम है, इस क्षेत्र में मैंने जो सफलता प्राप्त की है, वह पूज्य गुरुदेव की कृपा ही है।

रसायन विज्ञान के अन्तर्गत पारे (पारद) को शुद्ध करना, उसे दोष मुक्त बनाना, उसमें से सभी प्रकार के मल का निष्क्रमण करना आदि कार्य है, दूसरे चरण में पारद के सोलह संस्कार है, जिसके माध्यम से पारद स्वर्ण भक्षी बन जाता है, और आगे चल कर वह पारा ही पारस के रूप में निर्मित हो जाता हैं, इस प्रकार से पारस से लोहे को स्पर्श करा कर उसे सोने में रूपान्तरित किया जा सकता है।

यह अपने आप में गहन, गंभीर और विस्तृत विषय है, इसका जितना अध्ययन किया जाय वह कम है। मैं यहां पर केवल दो तीन प्रयोग दूंगा जो कि रसायन में रूचि रखने वाले साधकों के लिए अनुकूल और महत्वपूर्ण होंगे।

१- देह सिद्धि

देह सिद्धि का तात्पर्य पारद को इस प्रकार से संस्कारित करना है, कि जिसके सेवन से यह शरीर समस्त प्रकार की व्याधियों से मुक्त हो सके, वृद्धावस्था समाप्त हो सके, और पूरा शरीर दिव्य, चैतन्य, तेजस्वी और लोहे की तरह मजबूत हो सके।

इस सम्बन्ध में कई विद्वानों ने अपने अपने ग्रन्थों में देह सिद्धि के बारे में विवरण वर्णन दिया है। जिन लेखकों के ग्रन्थों में देह सिद्धि के बारे में जानकारी मिलती है, उनके नाम इस प्रकार है-

१- आदिमआचार्य २- चन्द्रसेन , ३- लंकेश,(रावण) ४-विशारद, ५- कपाली, ६- मत्त, ७-माण्डव्य ८- भास्कर, ९-सूरसेन, १०- रत्नकोष, ११- शम्भु १२- सात्विक, १३- नारवाहन, १४-इन्द्रद, १५- गोमुख, १६- कलम्बि, १७-व्याडि, १८-नागार्जुन, १९-सुरानन्द २०- नागबोधी, २१- यशोधन, २२- खण्ड, २३- कापालिक, २४-ब्रह्मा, २५- गोविन्द २६- लम्पक और २७- हरि ।

मैने इन सभी लेखकों से संबंधित ग्रन्थों का अध्ययन किया है, कुछ ग्रन्थ तो अपने आप में अद्वितीय है, जो साधक रसायन क्षेत्र में उन्नति करना चाहते है, जो इसक्षेत्र में पूर्णता प्राप्त करना चाहते है, उनको उपरोक्त लेखकों से संबंधित ग्रन्थों का तो अध्ययन करना ही चाहिए , मेरी राय में निम्न ग्रन्थ भी इस क्षेत्र में सूर्य के समान तेजस्वी है, जिसका उपयोग करना चाहिए ।

१— रसराज शंकर २— रसराज मंगल, ३— रसेन्द्र सार, ४- रसेन्द्र हृदय, ५- सूत महोदधि, ६- धनवन्तरीय पटल, ७- महारसायन तंत्र, ८- रस संग्रह ९- दिव्य रसेन्द्रसार १०- रस रत्न ११- रस कंकाली, १२— गोरक्ष संहिता, १३— रस रत्नाकर (नित्यनाथ) १४— रस हृदय

इनमें से अधिकतर ग्रन्थ हस्तलिखित या लुप्त प्रायः हैं, फिर भी जो रूचि रखने वाले है, जो इस क्षेत्र में आगे बढ़ने वाले है, वे अवश्य ही इन ग्रन्थों को प्राप्त कर सकते है, या मेरे पास आकर इन ग्रन्थों का अध्ययम कर सकते है ।

१५- रस विश्व दर्पण, १६- शिवागम १७- अगस्त्य सहिता, १८- रस रत्नाकर (नागार्जुन) १९- रसेन्द्र भैरव २०- रस सर्वेश्वर २१- धातु कल्प (रूद्रयामल) २२- रसोपनिषद् २३- रस संजीवनी २४- भैरव सिद्धि कल्प।

इस के अलावा भी रस या पारद से संबंधित ग्रन्थ उपलब्ध है, आवश्यकता, जिज्ञासा और जीवट की है, और आवश्यकता इस बात की हैं कि इस मार्ग में आगे बढ़ने वाले व्यक्ति के हृदय में इस क्षेत्र में पूर्णता प्राप्त करने की भावना हो।

ऊपर मैंने देह सिद्धि के बारे में संक्षिप्त वर्णन किया था, देह सिद्धि आज के युग में भी संभव है और नागार्जुन ने इसके बारे में स्पष्ट कहा है-

ससकः सर्वमोहघ्नः कफपित्तविनाशनः।
नैत्ररोगक्षयघ्नश्य लोहपारदअंजनः ।।
नागार्जुनेन संदिष्टौरसश्च रसकावुभौ।
श्रेष्ठो सिद्धरसौ ख्यातौ देहलौहकरौ परम् ।।

अर्थात् पारे को अभ्रक चूर्ण में पका कर अम्ल में सूरण रस भावना दी जाय और फिर इसे खरल कर कोष्ठी यंत्र में अग्नि ताप दिया जाय, लगभग तीन घण्टे तक ऐसा करने पर पारद सूर्य के समान दिव्य और तेजस्वी हो जाता है, ऐसे पारद का नित्य चौथाई रत्ती सेवन किया जाय तो एक महीने में ही पूर्ण रूप से देह सिद्धि हो जाती हैं और उसका शरीर लोहें की तरह मजबूत सोने की तरह तेजस्वी और अपने आप में दिव्य आभायुक्त बन जाता है।

उपरोक्त विधि अत्यन्त सरल है, और मेरी राय में यदि इस क्षेत्र में किसी को थोड़ा सा भी ज्ञान है, तो वह इसमें सफलता पा सकता है।

आज मैं इस महत्वपूर्ण दिवस पर 'रस मणि' के बारे में जानकारी प्रस्तुत कर रहा हूँ, जो कि अपने आप में सर्वथा गोपनीय और महत्वपूर्ण रही है। नागार्जुन ने

इसको 'आकाश गामिनी गुटिका।' कहा है, और इसके माध्यम से एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने की क्रिया सम्पन्न की है, यद्यपि यह आकाश गामनी क्रिया भी इस रस-मणि के माध्यम से ही सम्पन्न होती है।

रस मणि

अंग्रेजी में इसको हाइड्रोलिक कहते है, अर्थात् 'पानी की मणि बनाना' यह रसायन विज्ञान के माध्यम से संभव है। यदि पारे को संस्कार से सिद्ध बना कर पक्व बीज में जारण किया जाय तो रस मणि तैयार हो जाती है। यह रस मणि अपने आप में अत्यन्त दिव्य और तेजस्वी होती है। इस मणि के माध्यम से १०८ प्रयोग सम्पन्न किये जाते है। देव रत्न में बताया गया है, कि इस मणि के

द्वारा व्यक्ति सर्वथा सुरक्षित रहता है और यदि यह मणि जेब में रहती है, तो आने वाले खतरे का पूर्वानुमान लग जाता है, इसी ग्रन्थ में यह भी बताया है, कि इस मणि को अपने सिरहाने रख कर रात्रि को सो जाय और सोने से पूर्व प्रश्न जानना चाहे, तो उस प्रश्न का उत्तर मिल जाता है. परन्तु ये क्रियाएं सम्पन्न करने से पूर्व इस मणि को अपनी दाहिनी हथेली में रख कर पूर्ण श्रद्धापूर्वक एक बार माला मंत्र जप कर देना चाहिए, जिससे कि यह मणि संबंधित साधक के लिए सिद्ध हो जाय। वह मंत्र इस प्रकार है–

ॐ ह्रीं ह्रूं फट् चक्रेश्वरी परत पादुका साधनं स्वर्ण देहि वज्र देहि फट्

यह मंत्र जप किसी भी माला के द्वारा सम्पन्न किया जा सकता है।

जैसा कि मैंने ऊपर बताया है कि इस रस मणि से १०८ प्रकार के लाभ उठाये जा सकते है। जिनमें से कुछ उदाहरण इस प्रकार है-

१- इसके पास में रहने से व्यक्ति सुरक्षित रहता है और आने वाले खतरे का आभास पहले से ही हो जाता है। २– इस गुटिका को मंत्र सिद्ध कर यदि कोई प्रश्न या लाटरी का नम्बर अथवा कोई अन्य जानकारी साधक चाहे तो मंत्र का ११ बार उच्चारण कर इस सिद्ध गुटिका को सिरहाने रख कर सो जाय तो रात्रि में उसे उस प्रश्न का उत्तर मिल जाता है। ३- नागार्जुन के अनुसार यदि इस पारद गुटिका का कुछ भाग चील के अण्डों में रख दिया जाय और बाद में जब अण्डे फूटे तो उसमें से वह पारद निकाल लिया जाय, ऐसे पारद को मुंह में रखते ही आकाश गामिनी सिद्धि प्राप्त हो जाती है। ४- नाथपंथियों के अनुसार किसी भी अमावस्या की रात्रि को या ग्रहण काल में इस गुटिका को दाहिने हाथ में रख कर एक माला मंत्र जाप किया जाय तो निश्चय ही साधक का मन चाहा कार्य सम्पन्न हो जाता है। ५- महारसायन तंत्र में बताया गया है कि यदि इस गुटिका

नागार्जुन ने स्वयं इस प्रकार की गुटिका की अत्यन्त प्रशंसा की है और कहा है कि यह तो अपने आप में एक सम्पूर्ण रत्न है, जिसे घर में रखने से ही आर्थिक उन्नति होती रहती है, जीवन में किसी प्रकार की बाधा या अड़चन नहीं आती, क्योंकि इस गुटिका के १०८ प्रयोग है, यदि गुटिका घर में है तो कभी भी इसका उपयोग हो सकता है।

को गजपुट अग्नि दे कर सिद्ध किया जाय और फिर इस गुटिका को पैरों के नीचे तलहटी पर रगडा जाय तो वह व्यक्ति जलगमन प्रक्रिया सिद्ध कर लेता है और वह पानी पर उसी प्रकार चल सकता है, जिस प्रकार आम आदमी जमीन पर चलता है। ६- इस गुटिका को पलास के कोयलों में रख कर जारण किया जाय तो इस गुटिका से जो श्वेत भस्म प्राप्त होगी, उस श्वेत भस्म को तांबे पर रखने से वह तांबा तुरन्त सोने में परिवर्तित हो जाता है। ७- मरल मातंगी ग्रन्थ के अनुसार यदि इसी गुटिका को ठंडे थूहर के दूध में घोट कर तैयार किया जाय और उस गुटिका को मुंह में रख दे तो व्यक्ति अदृश्य हो जाता है।

यों तो इस गुटिका के बारे में समस्त ग्रन्थों में बहुत कुछ लिखा गया है, जो कि इस छोटे से लेख में देना संभव नहीं है, परन्तु इसमें कोई दो राय नहीं, कि इसको शास्त्रों में "दिव्य गुटी" कहा है, यह गुटिका अगर अपने पास रखी जाय तो वह किसी पर भी वशीकरण क्रिया सम्पन्न कर सकता है, यदि यह गुटिका अपने जेब में रख कर किसी अधिकारी से मिले तो वह अधिकारी उसकी बात मान लेता है।

सम्मोहन और वशीकरण क्रिया में तो यह गुटिका अपने आप में अद्वितीय है। इस गुटिका के प्रभाव से

व्यक्ति के शरीर में कुछ ऐसा आकर्षण उत्पन्न हो जाता है, कि लोग पुरुष या स्त्री उससे आकर्षित होते है और एक प्रकार से उन पर सम्मोहन सा छा जाता है।

रस कंकाली ग्रन्थ में इस गुटिका के बारे में कहा गया है, कि १२ घंटे तक इस गुटिका को शक्कर में रख कर गुटिका को हटा दें और वह शक्कर दूध या चाय में मिला कर जिसको भी पिलाई जाय, तो पीने वाला तुरन्त वश में हो जाता है और मन चाहा कार्य करने लग जाता है।

इसी ग्रन्थ में आगे बताया गया है कि यदि श्मशान का कोयला लाकर उसके साथ इस गुटिका को बांध दी जाय और पूरी रात यह गुटिका उस कोयले से बंधी रहे, दूसरे दिन प्रातः काल गुटिका को अपने स्थान पर रख दे और वह कोयला यदि शत्रु के घर में फेंक दिया जाय या उसके मकान पर कहीं गाड़ दिया जाय तो उसके घर में नित्य कलह होता रहता है और आर्थिक दृष्टि से धीरे-धीरे वह घर दरिद्री हो कर तबाह हो जाता है।

रस दर्पण में इस गुटिका के बारे में कहा गया है, कि यदि इस गुटिका को दुकान में किसी कपडे में बांध कर लटका दिया जाय तो दुकान की बिक्री आश्चर्यजनक रूप से बढ़ जाती है, और इस प्रकार लगातार लक्ष्मी आती ही रहती है।

एक अन्य ग्रन्थ में इस गुटिका के बारे में बताया है, कि किसी तांबे के गिलास में इस गुटिका को रख दिया जाय, और उस गिलास में पानी भर दिया जाय सुबह उठने पर गिलास में से गुटिका को तो बाहर निकाल दिया जाय और वह पानी यदि रोगियों को पिलाया जाय तो उनके रोग समाप्त हो जाते है। यदि किसी को भूत प्रेत लगा हो, और उसे इस जल को पिलाया जाय तो शरीर स्थित भूत प्रेतों का उपद्रव समाप्त हो जाता है, यदि इस प्रकार के जल को घर में छिड़का जाय तो घर में किसी ने यदि कोई क्रिया या तांत्रिक प्रयोग सम्पन्न करवाया हो तो वह तांत्रिक प्रयोग समाप्त हो जाता है।

नागार्जुन ने स्वयं इस प्रकार की गुटिका की अत्यन्त प्रशंसा की है और कहा है कि यह तो अपने आप में एक सम्पूर्ण रत्न है, जिसे घर में रखने से ही आर्थिक उन्नति होती रहती है, जीवन में किसी प्रकार की बाधा या अड़चन नहीं आती, क्योंकि इस गुटिका के १०८ प्रयोग है, यदि गुटिका घर में है तो कभी भी इसका उपयोग हो सकता है।

उपहार

मेरा पिछला कई वर्षों का यह अनुभव है, कि इस प्रकार की 'दिव्य गुटिका' को प्राप्त करने के लिए बहुत अधिक दबाव पड़ता है। रस सिद्ध आचार्यों ने कहा है कि इस गुटिका की बिक्री नहीं की जानी चाहिए, नित्य गुटिका से संबंधित मंत्र जप होना चाहिए और पूर्ण श्रद्धा के साथ गुटिका का उपयोग करना चाहिए तभी इसका फल प्राप्त हो पाता है, इसलिए केवल भारत में रहने वाले पत्रिका पाठकों को केवल एक पत्रिका सदस्य बनाने पर यह गुटिका उपहार स्वरूप प्रदान की जा सकती है।

आप किसी व्यक्ति को पत्रिका सदस्य बना कर सदस्यता शुल्क प्राप्त कर लें और हम आपको वी.पी. से यह गुटिका भेज देगे जिससे कि आपको सर्वथा उपहार रूप में गुटिका प्राप्त हो जायेगी और जिनको आप पत्रिका सदस्य बनायेगे उनको हम पूरे वर्ष भर पत्रिका नियमित रूप से भेजते रहेगे ।

देह सिद्धि गुटिका प्रपत्र

मैं पत्रिका सदस्य हूँ आप मुझे ९६)रू. पत्रिका शुल्क तथा ९) रू. वी.पी. खर्च लगाकर यह गुटिका निम्न पते पर मुझे भेज दें । वी.पी. प्राप्त होने पर मैं पोस्टमेन को धनराशि दे कर वी.पी. छुड़ा लूंगा ।

पत्रिका सदस्यता संख्या ....

मेरा नाम ....

मेरा पूरा पता ....

....

वी.पी. छूटने पर आप मेरे निम्न मित्र या परिचित को पूरे वर्ष भर पत्रिका भेजते रहे-

मेरे मित्र का नाम ....

मेरे मित्र का पूरा पता ....

....

नोटः- यह सुविधा पत्रिका प्राप्ति के बाद एक महीने तक ही उपलब्ध होगी ।

इसे केवल पत्रिका सदस्य ही प्राप्त कर सकेंगे । 卐

आरती

जय सन्यासी अग्रणी जय शान्त रूपं ।।१।।
जय जय सन्यस्त्वं मा जय भगवद्द्वीपं ।।
ॐ जय जय जय निखिलं

हिमालये निवसति मुक्त त्वं प्रकृति त्वं मध्ये ।
विचरति गिरिवर गहने गह्वर सहि मुदिता ।।२।।
ॐ जय जय जय निखिलं ।

शान्तं वेशं भव्यं अद्वितीय रूपं ।
व्याघ्रं वज्र विहन्तु वक्षस्थल त्व त्वं ।।३।।
ॐ जय जय जय निखिलं ।।

वेद पुराणं शास्त्रं ज्योतिष महि तत्वं ।
मंत्र तंत्र उद्धारय साध्यं सहि सहित ।।४।।
ॐ जय जय जय निखिल ।

ऋषि दिव्यं देह भस्म रुद्राक्षं सहितं ।
विचरति निशिदिन प्राप्ते धन्य महि युक्तं ।।५।।
ॐ जय जय जय निखिलं

सिद्धाश्रम स प्राणं मंत्रं सृष्टस्वं ।
लक्ष लक्ष निहारत अद्वय अधियुक्तं ।।६।।
ॐ जय जय जय निखिलं

भव्य विशालं नैत्रं भाल तेजस्वं ।
लक्षं शिष्यं ध्यावति निखिलेश्वर गुरुवम् ।।७।।
ॐ जय जय जय निखिलं ।।

संगीत युक्तं आरार्तिक यः पठत यदि श्रणुतं ।
गुरु मोद वर प्राप्तुं शिष्यत्व पूर्णं ।।८।।
ॐ जय जय जय निखिलं

सन्यास सिद्ध पंच रत्न

सिद्धाश्रम और सम्पूर्ण भारतवर्ष में २१ जून सन्यास जयन्ती दिवस मनाया जाता है, इस दिन साधक नयी साधना प्रारम्भ करते हैं, गुरू के चरणों मे पहुंच कर सन्यास सिद्ध पंच रत्न धारण करते हैं, और जीवन में पूर्णता प्राप्त कर अपने जीवन को सौभाग्य युक्त बना देते हैं ।

वहुत कम साधकों को सन्यास पंच रत्न का ज्ञान होगा, मैं इस छोटे से लेख में इन पंच रत्नों के सम्बंध में दुर्लभ, प्रामाणिक और सिद्ध तथ्यों का वर्णन कर रहा हूं जिससे कि गृहस्थ साधक लाभ उठा सकें ।

सन्यासी का तात्पर्य यह नहीं है, कि वह जंगल में रहता हो, या भगवे कपड़े पहनता हो अथवा अपनी ही मर्जी से जीवन बिताता हो, अपितु सन्यासी का तात्पर्य यह है कि वे गृहस्थ में रहते हुए भी गृहस्थ की झंझटों से अपने आपको बचाए रख सके, जो निरन्तर साधना की ओर अग्रसर हो, और जिसके मन में यह बलवती इच्छा हो कि मैं अपने जीवन में साधना में अवश्य ही सफलता प्राप्त करूंगा स्वर्ण विज्ञान रसायन विज्ञान या आयुर्वेद विज्ञान में से किसी एक क्षेत्र में पूर्णता के साथ सफलता प्राप्त करूंगा ।

सन्यास-दिवस

शास्त्रों की मान्यता है, कि सन्यास दिवस के अवसर पर साधक या शिष्य प्रयत्न करके भी गुरू चरणों में पहुंचे, भक्ति भाव के साथ उनके चरणों में बैठे और अगले एक वर्ष के लिए किसी एक साधना या किसी एक क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त करने की प्रतिज्ञा करे, वह गुरू के सामने यह शपथ ले कि मैं यह एक वर्ष आपके चरणों में समर्पित कर रहा हूं, मेरी इच्छा और आकांक्षा अमुक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने की है, इसके साथ ही साथ

वह गुरू से उस गोपनीय विद्या की जानकारी प्राप्त करने का प्रयत्न करे।

गुरू तो कोई भी ज्ञान या जानकारी शिष्य को देने का प्रयत्न करता ही है, परन्तु गुरू पैसों से खरीदा हुआ गुलाम नहीं है, वह इस बात को देखता रहता है कि शिष्य में कितनी परिपक्वता या कितना स्नेह-संबंध आ पाया है। वह जितना ही ज्यादा गुरू के प्रति समर्पित होगा, वह जितना ही ज्यादा गुरू साधना में लीन होगा गुरू उतनी ही तेजी के साथ उसे उस ज्ञान को देने का प्रयत्न करेंगे, इसके लिए पूरा प्रयत्न शिष्य की तरफ से ही होता है।

और यदि गुरू के द्वार तक पहुंचना संभव न हो या कुछ ऐसी परिस्थितियां आ जाय जिसकी वजह से यात्रा न कर सके, या गुरू से स देह प्रत्यक्षतः न मिल सके तो अपने घर में ही गुरू चित्र के सामने स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर बैठ जाय और पूर्ण विधि विधान के साथ गुरू पूजन करे, और हाथ में जल लेकर यह दृढ संकल्प करे कि मैं यह पूरा वर्ष गुरू चरणों में लीन रहता हुआ. अमुक साधना में पूर्णता प्राप्त करने के लिए ही व्यतीत करूंगा और अमुक क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त करूंगा।

इसके साथ ही साथ जब वह ऐसा दृढ निश्चय कर लेता है. तो उच्च कोटि के योगी, सन्यासी और उसके प्रिय गुरू का भी प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष आशीर्वाद प्राप्त हो जाता है. जिससे वह अवश्य ही अपने क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर लेता है।

वह जीवन ही क्या जो गुमनामी के साथ व्यतीत हो जाय, उस जीवन का मकसद ही क्या, जिसके द्वारा आप हजारों लाखों लोगों का कल्याण न कर सके, वह जीवन जीवन कहा ही नहीं जा सकता, जो पूरे देश में प्रसिद्धि प्राप्त न कर सके, जो अपने जीवन में अद्वितीय न बन सके, और जो साधना के क्षेत्र में पूर्ण सफलता न प्राप्त कर सके।

वह जीवन ही क्या जो गुमनामी के साथ व्यतीत हो जाय, उस जीवन का मकसद ही क्या, जिसके द्वारा आप हजारों लाखों लोगों का कल्याण न कर सके, वह जीवन जीवन कहा ही नहीं जा सकता, जो पूरे देश में प्रसिद्धि प्राप्त न कर सके, जो अपने जीवन में अद्वितीय न बन सके, और जो साधना के क्षेत्र में पूर्ण सफलता न प्राप्त कर सके।

यह दिवस दृढ़ "संकल्प दिवस" है, मनोयोग पूर्वक पूर्ण निश्चय का दिवस है, मन के चिन्तन और आत्मलोचन का दिवस है, यह दिवस इस बात का साक्षी है, कि मैंने अपने जीवन में अब तक क्या प्राप्त किया है, और मुझे क्या प्राप्त करना है, मैंने अब तक जो जीवन बिताया है, उसका क्या प्रयोजन रहा है, और मुझे इस एक वर्ष में जीवन की पूर्णता के लिए क्या कार्य, क्या साधना सम्पन्न करनी चाहिए, और यदि ऐसा आत्म विश्लेषण शिष्य दृढ़ता पूर्वक कर लेता हैं, तो यह दिन उसके लिए परिवर्तनकारी और सौभाग्यशाली होता हैं।

सन्यास सिद्ध पंच रत्न

ऊपर टिप्पणी में 'सन्यास सिद्ध पंचरत्न' का उल्लेख आया है, साधना में या जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्ति के लिए सन्यासी इन पंचरत्नों का प्रयोग उपयोग करते हैं, और इसीलिए वे दीर्घायु पाते हैं, इसीलिए उनका शरीर स्वस्थ, सौन्दर्ययुक्त और अत्यन्त सुन्दर बना रहता है, इसीलिए हजारों लाखों भक्त और व्यक्ति उनके चरणों में झुके रहते हैं, और इसीलिए वह अद्वितीय व्यक्तित्व बन सकता है।

गृहस्थ साधक भी पंचरत्नों का प्रयोग कर सकता है, और इसके माध्यम से वह अपने जीवन में प्रत्येक दृष्टि

से पूर्णता, सफलता और श्रेष्ठता प्राप्त कर सकता हैं।

१. सिद्ध कंकरण

यह अंगूठी के आकार का महत्वपूर्ण कंकरण माना गया है, जिसे सन्यासी अपनी उंगली में धारण किये रहते है, इसके माध्यम से उन्हें अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती रहती है, एक प्रकार से देखा जाय तो उनके जीवन में कठिन या असंभव नाम की कोई चीज नहीं होती, प्राचीन समय से ही सन्यासियों को सिद्ध कंकरण पहिनने की सलाह दी गई है, जिससे कि वे अपने जीवन में निश्चित और निर्भीक हो सकें, वे अपने जीवन में आगे बढ़ सकें, और सफलता प्राप्त कर सकें।

इसके निर्माण में रांगा, शीशा, जस्ता, चुंबक पत्थर अथवा सिद्ध धातु में से किसी एक धातु को कूट पीस कर कपड़े से छान कर उसकी पिस्टी बना लेनी चाहिए और फिर इसे गूलर के दूध में घोंट कर खूब कूटना चाहिए, कूटते कूटते जब इसमें से तार निकलने लगे, तब उसे अग्नि में जारण कर उसे चिकना और कड़ा बना देना चाहिए और उस गर्म तार की मुद्रिका बना कर जब वह लाल सुर्ख हो, तब उसे जाग्रत पारे में डुबो कर सिद्ध बना लेनी चाहिए, इसी को ग्रन्थों में "सिद्ध कंकरण" कहा गया है, यह अपने आप में अद्वितीय और दुर्लभ होता है, और प्रत्येक सन्यासी के लिए तो एक प्रकार से अनिवार्य है ही, प्रत्येक साधक के लिए भी जरूरी है, इस प्रकार का ककरण तैयार करने पर व्यय लगभग ३३०/रु. आ जाता है।

फिर इसी सन्यास दिवस के अवसर पर ही इस कंकरण को अपनी उंगली में धारण कर लेना चाहिए जिससे कि साधना के क्षेत्र में उसे निरन्तर सफलता प्राप्त हो सके, ऐसा कंकरण निरन्तर शरीर को स्पर्श किये रहता है, जिससे शरीर में बराबर विद्युत प्रवाह बनी रहती है, शरीर रोग रहित, सुन्दर, आकर्षक, और अद्वितीय बन जाता है, और यदि श्रद्धापूर्वक इसे धारण किये रहे, तो उसके जीवन के प्रत्येक कार्य सफल होते रहते है एक प्रकार से देखा जाय तो साधना और सिद्धि के लिए यह अत्यन्त महत्वपूर्ण और दुर्लभ कंकरण कहा जाता है।

तंत्र ग्रन्थों में यह बताया गया है कि गृहस्थ को यदि अपने प्राण प्रिय है, अपना शरीर प्रिय है तो उसे यह कंकरण भी उतना ही प्रिय होना चाहिए क्योंकि इसी के द्वारा वह प्रत्येक कार्य में सिद्धि और सफलता प्राप्त करने में समर्थ सफल हो पाता है।

२- सिद्ध जल कड़ा

हकीकत में देखा जाय तो इसको योगी कड़ा या सन्यासी कड़ा कहा जाता है। गोरखनाथ ने इसे जल कड़ा या जलमुद्रा कहा है। अपने हाथ की कलाई में सन्यासी लोग इस प्रकार का कड़ा धारण किये रहते है।

सन्यासियों के लिए या गृहस्थ व्यक्तियों के लिए यह कड़ा पूर्ण सौभाग्य शाली माना गया है। ऐसे कडे को वे हृदय की सात परतों में छिपा कर रखते है, कुछ योगी इसे अपने हाथ में धारण भी कर लेते है।

इसके माध्यम से गृहस्थ पर किसी प्रकार का मारण-मोहन या वशीकरण नहीं हो पाता। एक प्रकार से वह निर्भय और निश्चिन्त होता है यदि गृहस्थ भी इस कड़े को धारण करता है, तो उस पर किसी प्रकार की तांत्रिक क्रिया सम्पन्न नहीं हो पाती। भूत प्रेत पिशाच आदि उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते। वह जहां कहीं भी रहता है, शत्रुओं से पूर्णत सुरक्षित रहता है, शत्रु अपने आप परास्त होते रहते है और किसी भी प्रकार से शत्रु ऐसे व्यक्ति पर न तो हावी हो सकते है और न उसके शरीर को नुकशान पहुंचा सकते है न ऐसे व्यक्ति को किसी प्रकार की बाधा या अड़चन आ सकती है।

इसके निर्माण में तीन धातुओं को परस्पर मिला कर उसके ऊपर चेतन्य पारे का लेप किया जाता है, और फिर उसे जल मुद्रा से बांधा जाता है क्योंकि धातु पर पारे का लेप करना अत्यन्त कठिन है। इस प्रकार से जल बन्धन कर फिर उसे अग्नि ताप दे कर कडे को पूर्ण सक्षम

बनाया जाता है। यदि इसके निर्माण में थोड़ी सी भी गलती होती है तो सारा रसायन चौपट हो जाता है और यह कड़ा किसी लायक नहीं रहता, यह सारी क्रिया कठिन है, और इस प्रकार का कड़ा निर्माण करने पर लगभग ३३०) रू. व्यय आ जाता है। मगर इतना व्यय करने के बावजूद भी यह कड़ा बन जाय तो सौभाग्य ही समझना चाहिए।

सन्यासी इस कड़े को धारण करते है या झोली में रख देते है गृहस्थ इस कड़े को पहिन सकते है या सुरक्षित रख सकते है, वास्तव में ही यह जल कड़ा सौभाग्य दायक और श्रेष्ठ माना गया है।

३- सिद्ध वज्रदण्ड

यह तावीज के आकार का अत्यन्त दुर्लभ रसायन प्रयोग होता है, जिसे प्रत्येक गृहस्थ अपने गले में धारण किये रहता है। आगे के योगियों ने इसको गन्डा भी कहा है। इसके माध्यम से सन्यासी को कई प्रकार की सिद्धियां स्वतः प्राप्त हो जाती है, इसको धारण करने के बाद यदि साधक थोड़ी तांत्रिक साधना सम्पन्न करे तो उसे निश्चय ही शीघ्र सिद्धि प्राप्त होती है।

अनुभव में यह आया है कि वज्रदण्ड जहां साधक को पूर्ण सुरक्षा प्रदान करता है, सैकड़ों शत्रु मिल कर के भी उसका किसी भी प्रकार से कोई अहित नहीं कर सकते किसी भी क्षेत्र में शत्रु परास्त रहते है, और साथ ही साथ इस वज्रदण्ड की यह विशेषता होती है, कि कुछ सिद्धियां तो उसे स्वतः प्राप्त हो जाती है, भूत प्रेत सिद्धि या भूतों को वश में करना, उनसे मनचाहा कार्य करवा देना, तीव्र और उग्र साधनाओं को सिद्ध करना, योगिनियों को वश में करके उनसे मनचाहा द्रव्य प्राप्त करना, आदि साधनाएं थोड़े से प्रयत्न से ही सिद्ध हो जाती है।

इस वज्रदण्ड के द्वारा ही सन्यासी अपने भक्तों के कई कार्य सम्पन्न कर लेता है और वह सिद्ध माना जाता है, इस प्रकार के वज्रदण्ड के निर्माण के लिए निवङग, तथा थूहर, को मिलाकर एक गोल गोली बनाई जाती है और अश्वत्थ के सफेद दूध में इस गोली को घोट कर उसे वज्रदण्ड के रूप में सिद्ध किया जाता है, और फिर इसे तावीज में भर कर धारण किया जाता है। इस सारी क्रिया पर लगभग ३३०) रू. व्यय आ जाता है, ऐसा वज्रदण्ड कोई भी पुरुष या स्त्री धारण करता है। जो जीवन में पूर्ण सफलता चाहते है, उन्हें इस प्रकार का वज्रदण्ड अवश्य ही धारण करना चाहिए।

विश्वबेधी सुदंड

सन्यासियों में यह इसी नाम से पुकारा जाता है, और यह अंगूठी के आकार का होता है, परन्तु गुरू गोरखनाथ ने कहा है, कि जो पूरे संसार पर विजय प्राप्त करना चाहते है, जो पूरे संसार पर राज्य करना चाहते है, उनको यह विश्वबेधी सुदण्ड धारण करना चाहिए।

इसमें वशीकरण की अन्यतम विशेषता होती है। उच्चकोटि के गृहस्थ साधक या सन्यासी इसे अंगूठी में धारण किये रहते है, इसकी विशेषता यह है कि सामने वाले किसी स्त्री या पुरुष की नजर इस मुद्रिका पर पड़ती है तो वह पुरुष स्वतः वश में हो जाता है, या यदि इस अंगूठी का स्पर्श जिससे भी हो जाता है, वह वश में बना रहता है और जीवन भर उस सन्यासी या धारण करने वाले व्यक्ति की आज्ञा मानता रहता है।

एक प्रकार से देखा जाय तो यह सम्मोहन अथवा वशीकरण मुद्रिका है। इसके निर्माण में बड़ के दूध में पारद को बांध कर फिर उसमें धातु का जारण किया जाता है और उसे अग्नि वेध कर उसे मुद्रिका का आकार दिया जाता है, इस प्रकार यह मुद्रिका सिद्ध हो जाती है और इसमें दूसरों को सम्मोहित करने या वशीकरण करने की अद्भुत क्षमता आ जाती है।

ऐसा साधक विश्व में कहीं पर भी असफल नहीं होता और सम्पूर्ण विश्व को अपने वश में करने की शक्ति प्राप्त कर लेता है। इस प्रकार की मुद्रिका को तैयार करने पर

पृ. ४० का शेष

भी व्यय ३३०) रु. आती हैं। साधक स्वयं इस प्रकार की मुद्रिका तैयार कर इस दिवस को धारण कर जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकते है।

५- समुद्र सिद्ध कायाकल्प कंकरण

इसे 'गोरख कंकरण' भी कहा जाता है, किसी पात्र में समुद्र का जल भर कर आंच पर रख कर उस में धीरे धीरे मधु का जारण किया जाता है, और जब वह मोम बन जाय तो उसमें पारे का संस्कार कर उस मोम को त्रिधातु पर लपेट कर चौबीस घण्टे उसे समुद्र जल में ही पकाया जाता है, इससे इस प्रकार का 'काया कल्प कंकरण' तैयार हो जाता है।

इसके धारण करने से स्वतः पूरे शरीर में परिवर्तन होता रहता है और यदि सन्यासी को या साधक को किसी प्रकार का रोग हो, तो वह निश्चय ही रोग समाप्त हो जाता है।

शास्त्रों में यह बताया गया है कि इस कड़े में रोग मुक्त करने की अदभुत क्षमता है, यदि इस कड़े या मुद्रिका को रात भर पानी में रख कर सुबह वह पानी रोगी को पिला दे तो रोगी का रोग दूर होना शुरू हो जाता है।

इसमें तो कोई दो राय नहीं कि इसे धारण करने वाले व्यक्ति के शरीर के रोग तो समाप्त होते ही है, उसकी वृद्धावस्था समाप्त होने लगती है, सिर पर काले और घने बाल आने लगते है, आंखों की रोशनी और शरीर में पूर्ण पौरुष के साथ साथ वह एक ऐसा व्यक्तित्व बन जाता है, कि सामने वाला देखता ही रह जाता है। एक प्रकार से धीरे धीरे पूरे शरीर का कायाकल्प हो जाता है, इस पर भी व्यय मात्र ३३०) रु. ही आता है।

वास्तव में ही यह अपने आप में दुर्लभ और सिद्ध 'काया कल्प मुद्रिका' कही जाती है, और इसे गृहस्थ साधक अथवा सन्यासी धारण किये रहते है जिससे उनका शरीर दर्शनीय चमत्कारिक और आश्चर्यजनक हो जाता है।

ऊपर मैंने सन्यासी पंचरत्न का विवेचन किया। इन पांचों दुर्लभ वस्तुओं से ही सन्यासी सम्पूर्ण विश्व में सम्मान, यश, प्रसिद्धि और पूर्णता प्राप्त करने में समर्थ, सफल हो पाते है। ★

पृ. ८ का शेष

इसके बाद उस शूकर दन्त (न्यौछावर ३००) रू.) के खोखले हिस्से में एक काली मिर्च, एक-दो इलायची के दाने तथा जल भर कर बांये हाथ में पकड़ ले और दाहिने हाथ से मूंगे की माला से मंत्र जप करे।

तांत्रोक्त मंत्र

ॐ ह्लीं ह्रीं क्रीं दिव्य देह क्रीं ह्रीं ह्लीं फट्।।

इसमें केवल एक माला मंत्र जप करने का विधान है, और फिर उस जल को किसी शीशी में भर कर रख दें। इसमें दूसरा पानी मिला सकते है, और नित्य इस पानी का एक चम्मच लेना उचित रहता है।

जब पानी समाप्त हो जाय तो रविवार की रात्रि को फिर यह प्रयोग सम्पन्न कर सकता है। इसमें जितना पानी आता है, उसका दस गुना पानी अलग से मिला कर रखा जा सकता है।

इस पानी के सेवन से काया कल्प होने लगता है, और मेरा अनुभव यह रहा है, कि बाजीकरण, वीर्यस्तम्भन और पौरुषता में भी यह जल श्रेष्ठ प्रभावकारी माना गया है।

यदि पुरूष या स्त्री अपने शरीर में किसी प्रकार की कमजोरी अनुभव करते हो या कोई बीमारी हो तो इसका एक चम्मच जल अनुकूलता प्रदान करता है। साधक चाहे तो आस पड़ोस के लोगों को भी इस जल का लाभ दे सकता है।

वास्तव में ही यों तो मेरे पास कई प्रयोग है, जो समय समय पर मै पत्रिका के माध्यम से आप तक पहुंचाने की व्यवस्था करूंगा, पर ये तीनों ही प्रयोग मुझे उच्च कोटि के योगियों से मिले थे और यदि साधक श्रद्धापूर्वक मंत्र जप करे, और विश्वास के साथ साधना करे तो उसे अवश्य ही सफलता मिल सकती है। ●

पोस्टल एल. आर. जे. ३६६७/८६-८७
रजि० नं० ३५३०५/८१

"पारदेश्वर धन सम्पत्तिं"

(भगवान पारदेश्वर शिवलिंग के घर में स्थापित करने से धन और सम्पत्ति स्वयं आती है)

श्रावण मास के प्रथम सोमवार

२४ जुलाई १९८९

को

अपने घर में

भगवान पारदेश्वर

को

स्थापित करें

* जो कि जीवन का सौभाग्य है। पारे से निर्मित सुन्दर आकर्षक कुबेर पति भगवान शिव, जीवन में सब कुछ देने में समर्थ है।
* पांच तोले से भी ज्यादा वजनदार मंत्र सिद्ध, चैतन्य, प्राण प्रतिष्ठायुक्त पारदेश्वर प्राप्त करना जीवन को सभी दृष्टियों से पूर्णता प्रदान करना है

न्यौछावर–मात्र २९४)रु.

यह रियायत भारत में इस पत्रिका की प्राप्ति के एक महीने के भीतर भीतर संभव है।

सम्पर्क

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान

डॉ. श्रीमाली मार्ग : हाईकोर्ट कोलोनी
जोधपुर (राज.) – ३४२००१